MANAV JEEVAN VIKAS SAMITI

MJVS

SINCE 2000

मानव जीवन विकास समिति

स्मारिका (2000-2020)

जल, जंगल और ज़मीन, ये हो जनता के अधीन...

अनुक्रमणिका

03 प्रस्तावना
04 भूमिका
06 शुभकामना संदेश
07 20 वर्षीय यात्रा की एक झलक
09 प्रभाव
10 सारांश
11 संस्था के बारे मे
15 युवा विकास
20 प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन
24 महिला नेतृत्व
28 वन और भूमि अधिकार
31 रोजगार और आय सृजन
36 बदलाव की कहानी
38 ग्रामीण पर्यटन
41 राहत कार्य
42 अन्य कल्याणकारी गतिविधियां
43 पुरस्कार और सम्मान
44 मीडिया कवरेज
46 समिति के पदाधिकारी
47 टीम के सदस्यों के अनुभव
49 20 वर्षों में संस्था के समर्थक
51 वित्तीय सारांश
52 भावी योजनाएँ

प्रस्तावना

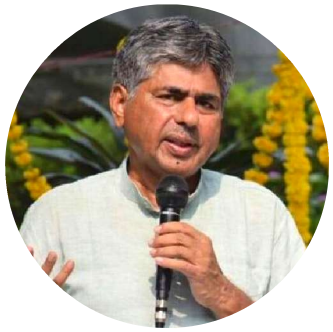

एकता परिषद में हमारा हमेशा से यह विश्वास रहा है कि किसी भी संस्था के लोग ही उस संस्था के कार्यों को सफल बनाते हैं एवं उस संस्था की यात्रा को उसमे उपस्थित लोग ही तय करते हैं। यहाँ की यात्रा तब शुरू हुई जब निर्भय भाई ने बिजौरी मझगवां केंद्र के काम की ज़िम्मेदारी उठाई। यह कड़ी और मजबूत हो गई जब अनीश भाई ने इस यात्रा में उनका साथ दिया। मानव जीवन विकास समिति के पीछे मुख्य विचार एक प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण करना था जहाँ हम आदिवासी समुदायों को भूमि और जल संसाधनों का उपयोग करने पर प्रशिक्षित कर सकें।अन्यथा उन्हें उनकी जमीन के पट्टे तो मिल जाते हैं परन्तु वह ज़मीन का प्रभावपूर्ण उपयोग नहीं कर पाते हैं। एकता परिषद के विभिन्न कार्यों पर आधारित विभिन्न प्रशिक्षण केंद्र हैं। कृषि प्रशिक्षण के लिए भी हम एक केंद्र बनाना चाहते थे और इसके लिए हमने बिजौरी मझगवां केंद्र को चुना। तो ये एकता परिषद के चार धाम हैं- जौरा, कटनी, तिल्दा और मदुरई।हमारा सपना था मझगवां केंद्र को एक कृषि प्रशिक्षण केंद्र बनाना और जब निर्भय भाई ने इस काम को संभाला, तो हम इस सपने को साकार कर पाए। अनीश भाई के जुड़ने के बाद युवा और भूमि के पहलू को भी जोड़ा गया, कई युवा शिविरों और यात्राओं का आयोजन किया गया, जिसने केंद्र को बहुत दृश्यता दी। मानव जीवन विकास समिति के साथ हमारा एक उद्देश्य यह भी था की बुंदेलखंड और बघेलखण्ड क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के साथ गहन कार्य की शुरुआत की जाए।

एकता परिषद नेटवर्क में कई संगठनों की क्षमता वर्धन में भी एम. जे. वी. एस. की बड़ी भूमिका रही है, चाहे वह प्रशासनिक काम हो या वित्तीय प्रबंधन आदि- एम. जे. वी. एस. ने कई संस्थाओं के स्टाफ को प्रशिक्षित किया है। जब भी कोई राष्ट्रीय अभियान या कार्यक्रम होता है, सभी व्यवस्थाओं का प्रबंधन एम. जे. वी. एस. द्वारा किया जाता है। इस प्रकार एकता परिषद के सभी बड़े सामाजिक आंदोलनों में एम. जे. वी. एस. एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जय जगत यात्रा की तैयारी की शुरुआत एक अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर से की गई थी, जिसका आयोजन मझगवां केंद्र में किया गया था। उसके बाद यहाँ एक अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस प्रकार मझगवां केंद्र स्थानीय स्तर पर, राज्य स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर भी एकता परिषद की सभी गतिविधियों में एक मुख्य भूमिका निभाता है। इसके अलावा, बैगा और गोंड आदिवासी समुदायों के साथ जमीनी स्तर पर एम. जे. वी. एस. अपने स्वयं के कार्यक्रमों को भी विशाल स्तर पर कर रहा हैं।

निर्भय भाई और एम. जे. वी. एस. की टीम ने अपनी सीमित संसाधनों के साथ ही, तमादी नामक एक फ्रेंच संस्था के साथ एक विशाल ग्रामीण पर्यटन परियोजना को भी शुरू किया। इसमें कई अंतर्राष्ट्रीय समूहों ने राजस्थान, केरल, हिमाचल और मध्य प्रदेश में ग्रामीण पर्यटन के लिए गरिमा इंडिया कार्यक्रम का हिस्सा बनकर विभिन्न गांवों का दौरा किया। निर्भय भाई ने एम. जे. वी. एस. में एक समर्पित टीम का गठन किया जिसमे अभय, दयाशंकर, तम्मा और कई प्रभावशाली लोग शामिल हैं। यह कितनी खूबसूरत बात है कि निर्भय भाई जैसा एक समर्पित और कुशल व्यक्ति कुछ प्रभावशाली करने का फैसला लेता है और इस तरह के एक सम्पूर्ण ढाँचे को खड़ा करता है, जिसका प्रभाव स्थानीय से वैश्विक स्तर तक दिखाई पड़ता है। जिल और मैं बहुत खुश हैं कि एम. जे. वी. एस. अपनी यात्रा के 20 साल पूरे होने का जश्न मना रहा है। पिछले 20 वर्षों में एम. जे. वी. एस. ने बहुत कुछ हासिल किया है। एम. जे. वी. एस. जैसी संस्थाएं वास्तव में एकता परिषद की रीढ़ हैं। जब ये सभी संगठन एक साथ आते हैं, तो इनकी ऊर्जा और प्रतिबद्धता से एकता परिषद जीवंत हो जाता है। हम बहुत खुश हैं और एम. जे. वी. एस. की पूरी टीम को इस २०वीं वर्षगाँठ के लिए बधाई देते हैं। मैं कामना करता हूं कि जो ज्ञान और अनुभव प्राप्त हुआ है, वह नई पीढ़ियों को भी मिले और वे इस कड़ी को आगे ले जाएँ।

राजगोपाल पी. व्ही.

संस्थापक, एकता परिषद

भूमिका

- निर्भय सिंह

यह पुस्तक जो आप पढ़ रहे हैं उसमें पिछले 20 वर्षों में मानव जीवन विकास समिति द्वारा किए गए कार्यों का विवरण है। हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि इस संक्षिप्त दस्तावेज में पिछले 20 सालों की खूबसूरत यात्रा को आप तक पहुंचा रहे हैं। हम आप सभी के सहयोग के आभारी हैं।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि मध्य प्रदेश के बिजौरी (मझगवां) नामक एक छोटे से मामूली गांव में स्थापित यह संगठन अब दुनियाभर में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यह सब वर्ष 1992 में शुरू हुआ जब ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान ने खादी एवं कृषि क्षेत्र में नए मानक स्थापित करने के लिए जमीन खरीदी।

शुरुआती वर्षों में, जब मैं भी श्री राजगोपाल जी (राजा जी) के नेतृत्व में सीख रहा था, 1998 में मुझे उस जमीन पर रहने के लिए बुलाया गया, और संभवत अप्रत्यक्ष रूप से मुझे उनसे मिलने के लिए बुलाया गया था। मैं स्वयं वास्तविक सच्चाई नहीं जानता लेकिन उसे एक तरफ रखते हुए, मैं अक्टूबर 1998 को वहां पहुंचा। वहां पहले से ही कुछ घर बनाए गए थे लेकिन मुझे आवास नहीं दिया गया। दो या तीन महीनों के लिए मैं बाहर एक छोटी सी झोपड़ी में रहने लगा जहां में खाना पकाना, सोना एवं सपने देखा करता था। सपना इस केंद्र को सुंदर बनाने की इच्छा का। शुरुआत में यहाँ न कोई बात करने के लिए या ना ही किसी तरह की मदद के लिए कोई व्यक्ति यहां था।इसके बावजूद मैं गांव में काम करने की सशक्त इच्छा के साथ आगे बढ़ता गया। लेकिन मैं यह सीख चुका था कि इस क्षेत्र में काम करने के लिए किसी बैनर या संस्था की जरूरत होगी।

इसी जरूरत के साथ अगस्त 2000 में एक आवेदन तैयार किया गया और 28 नवंबर 2000 को यह संस्था आधिकारिक तौर पर रजिस्ट्रार कार्यालय, जबलपुर में पंजीकृत हो गई। नियमों के मुताबिक, किसी भी संस्था या संगठन को शुरुआती 3 वर्षों में अपने ही संसाधनों से चलाना पड़ता है। संस्था 12A के तहत रजिस्टर हुई, इसे अपना पैन कार्ड मिला, टी. डी. एस. के लिए रजिस्टर हुई, और 3 साल बाद वर्ष 2005 में एफ. सी. आर. ए. में पंजीकृत किया गया। बाद में इसे 80G में भी पंजीकृत किया गया।

जैसे ही हमने इन सभी कानूनी औपचारिकताओं को पूरा किया, हमें लेजर फाउंडेशन कनाडा और शशि सपोर्ट एसोसिएशन स्विट्जरलैंड, से हमारा पहला वित्तीय सहयोग मिल गया जिसमें एम.जे.वी.एस. ने आदिवासी क्षेत्रों में काम किया और देशभर में इस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों को छात्रवृत्ति सहायता प्रदान की।

हमारा काम इसी के आसपास शुरू हुआ, और यह वर्ष 2010 में, कि तमादी, फ्रांस के साथ ग्रामीण पर्यटन का काम शुरू हुआ। इन सभी क्षेत्रों काम के साथ, और इसके स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, संगठन ने किसानों के साथ जैविक खेती को बढ़ावा देना काम करना शुरू किया। और साथ ही साथ क्षेत्रों में विभिन्न गतिविधियों को अंजाम दिया, जैसे - छात्रवृत्ति, युवा शिविर, जन वकालत, सरकारी योजनाओं की जागरूकता, वन अधिकार अधिनियम, महिला सशक्तिकरण, आजीविका कानूनों और योजनाएं के बारे में जागरूकता का निर्माण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, नेटवर्किंग और वैकल्पिक शिक्षा के उल्लेख किया इन क्षेत्रों के अलावा, सीमित संसाधनों के साथ भी, संगठन ने बहुत काम किया है। आप इसका विस्तृत विवरण इस पुस्तक में देखें।

जैसा मैं 20 वर्षों की इस यात्रा को याद करने के लिए बैठता हूं, मुझे लगता है कि कई उतार चढ़ाव के बाद, जिन उद्देश्यों के लिए यह संगठन गठित किया गया है, सफलतापूर्वक काफी हद तक हासिल किया गया है। संभव है कि हम कुछ हासिल करना भूल गए| फिर भी हमारे हमेशा प्रयास रहेगा कि संगठन हर व्यक्ति की रोजी-रोटी में मदद करने एक सहायक हो।अपनी स्थापना के बाद से, संगठन कई कार्यकर्ताओं, शुभचिंतकों, पत्रकार, राजनेता, विचारक, लेखक, और कई दयालु व्यक्ति द्वारा समर्थित रहा है। मैं इनमें से हर एक व्यक्ति के नाम जानता हूँ। मैं उन सभी के नाम लिख सकता हूं लेकिन सूची लंबी होने के कारण मुझे स्वयं को सीमित करना होगा। लेकिन मैं श्री राजगोपाल पी. व्ही., हमारे राजा जी, जिन्होंने हमें शुरुआत से ही अपने अमूल्य दिशा निर्देश एवं सहयोग प्रदान किया है, का नाम लिए बिना नहीं रह सकता।

इन 20 वर्षों में, गांवों के साथ काम करते हुए, संगठन ने अपनी प्रशिक्षण केंद्र को जैव विविधता के साथ तैयार एवं समर्पित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज, हजारों पेड़ों और जड़ी बूटियों की सैकड़ों प्रजातियां के संग्रह में सक्षम होने, केंद्र में लगभग 100-150 लोग की रहने की व्यवस्था करने में सक्षम होने का श्रेय सभी व्यक्तियों, सहकर्मियों और संगठन के सदस्य जिन्होंने इस यात्रा में हमारा साथ दिया, को जाता है।

एम. जे. वी. एस., न केवल ग्रामीण युवा बल्कि शहरी युवाओं के लिए भी, युवा विकास के विभिन्न तरीकों के लिए नियोजन और कार्रवाई के आधार के रूप में कार्य करता है। एम. जे. वी. एस. की टीम का हमेशा यह सतत प्रयास रहा है कि यह स्थान को अधिक गतिशील और सभी प्रकार के विकासात्मक प्रशिक्षण के लिए जानकारी पूर्ण एवं कार्ययोजना युक्त बने।

इसमें विभिन्न कैंप कार्यशाला, फील्ड विजिट के साथ-साथ युवाओं का व्यक्तिगत मार्गदर्शन भी शामिल है। यह अधिकतम लोगों को सुलभ सुनने के लिए डिजाइन किया गया है और विकास के विचारों एवं बेहतर अवसरों के लिए बहुत प्रभावी साबित हुए हैं।

" मुझे लगता है कि कई उतार चढ़ाव के बाद, जिन उद्देश्यों के लिए यह संगठन गठित किया गया है, सफलतापूर्वक काफी हद तक हासिल किया गया है।

शुभकामना संदेश

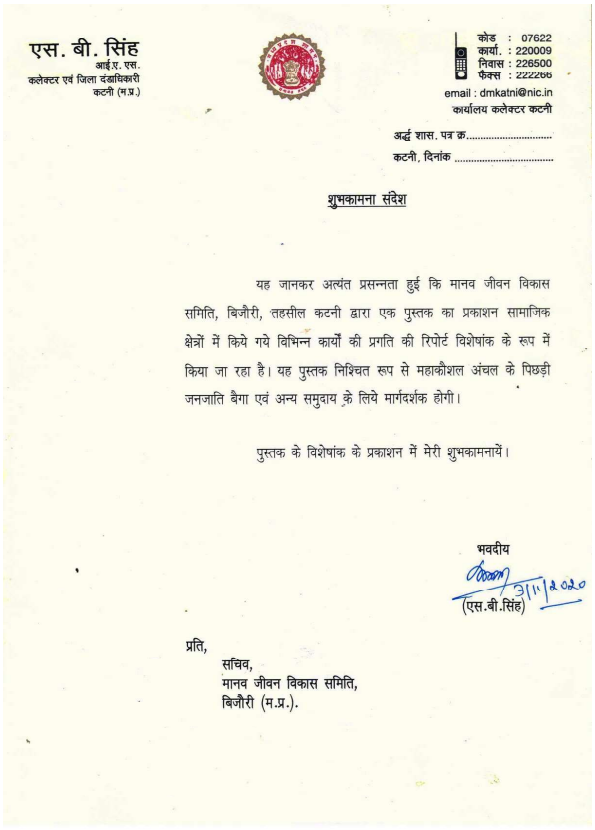

एस. बी. सिंह
आई.ए. एस.
कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी
कटनी (म.प्र.)

कोड : 07622
कार्या. : 220009
निवास : 226500
फैक्स : 222266
email : dmkatni@nic.in
कार्यालय कलेक्टर कटनी

अर्द्ध शास. पत्र क्र.....
कटनी, दिनांक .....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति, बिजौरी, तहसील कटनी द्वारा एक पुस्तक का प्रकाशन सामाजिक क्षेत्रों में किये गये विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट विशेषांक के रूप में किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से महाकौशल अंचल के पिछड़ी जनजाति बैगा एवं अन्य समुदाय के लिये मार्गदर्शक होगी।

पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनायें।

भवदीय
(एस.बी.सिंह)

प्रति,
सचिव,
मानव जीवन विकास समिति,
बिजौरी (म.प्र.).

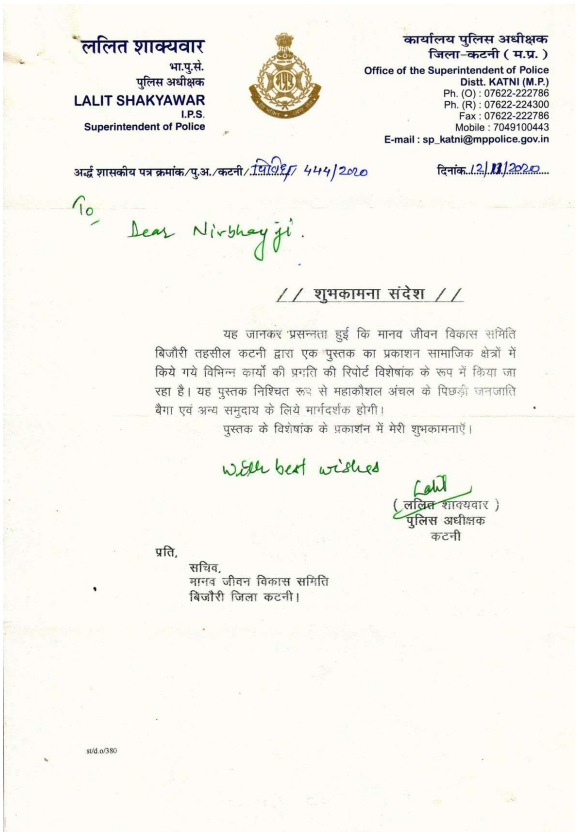

ललित शाक्यवार
भा.पु.से.
पुलिस अधीक्षक
LALIT SHAKYAWAR
I.P.S.
Superintendent of Police

कार्यालय पुलिस अधीक्षक
जिला-कटनी (म.प्र.)
Office of the Superintendent of Police
Distt. KATNI (M.P.)
Ph. (O) : 07622-222786
Ph. (R) : 07622-224300
Fax : 07622-222786
Mobile : 7049100443
E-mail : sp_katni@mppolice.gov.in

अर्द्ध शासकीय पत्र क्रमांक/पु.अ./कटनी/निर्भय/444/2020 दिनांक 12/11/2020

To
Dear Nirbhayji.

// शुभकामना संदेश //

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति बिजौरी तहसील कटनी द्वारा एक पुस्तक का प्रकाशन सामाजिक क्षेत्रों में किये गये विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट विशेषांक के रूप में किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से महाकौशल अंचल के पिछड़ी जनजाति बैगा एवं अन्य समुदाय के लिये मार्गदर्शक होगी।
पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनाएँ।

With best wishes

(ललित शाक्यवार)
पुलिस अधीक्षक
कटनी

प्रति,
सचिव,
मानव जीवन विकास समिति
बिजौरी जिला कटनी।

st/d.o/380

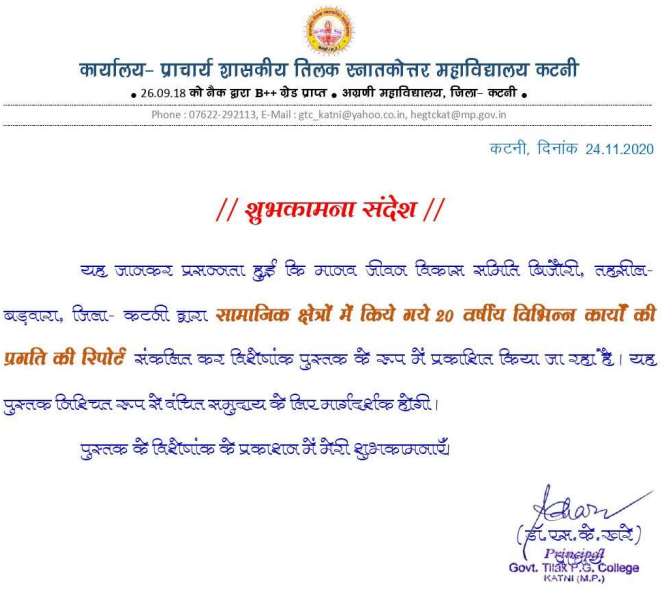

कार्यालय- प्राचार्य शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी
• 26.09.18 को नैक द्वारा B++ ग्रेड प्राप्त • अग्रणी महाविद्यालय, जिला- कटनी •
Phone : 07622-292113, E-Mail : gtc_katni@yahoo.co.in, hegtckat@mp.gov.in

कटनी, दिनांक 24.11.2020

// शुभकामना संदेश //

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति बिजौरी, तहसील-बड़वारा, जिला- कटनी द्वारा **सामाजिक क्षेत्रों में किये गये 20 वर्षीय विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट** संकलित कर विशेषांक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से वंचित समुदाय के लिए मार्गदर्शक होगी।

पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनाएँ

(ह.एस.के.खरे)
Principal
Govt. Tilak P.G. College
KATNI (M.P.)

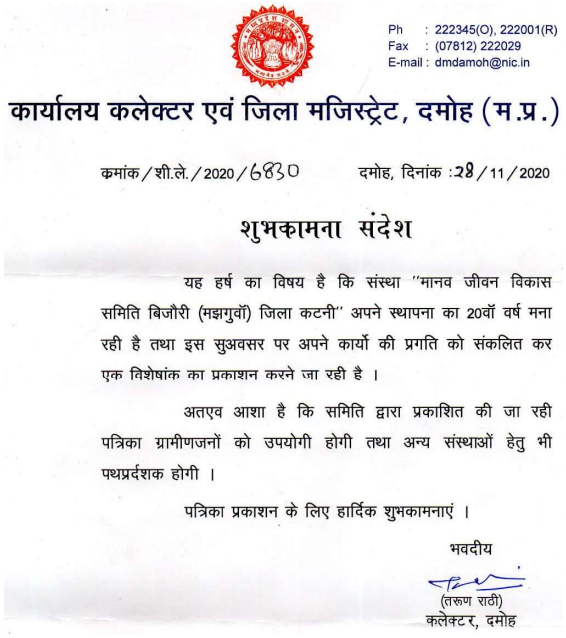

Ph : 222345(O), 222001(R)
Fax : (07812) 222029
E-mail : dmdamoh@nic.in

कार्यालय कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, दमोह (म.प्र.)

क्रमांक/शी.ले./2020/6830 दमोह, दिनांक :28/11/2020

शुभकामना संदेश

यह हर्ष का विषय है कि संस्था "मानव जीवन विकास समिति बिजौरी (मझगुवाँ) जिला कटनी" अपने स्थापना का 20वाँ वर्ष मना रही है तथा इस सुअवसर पर अपने कार्यो की प्रगति को संकलित कर एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है ।

अतएव आशा है कि समिति द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका ग्रामीणजनों को उपयोगी होगी तथा अन्य संस्थाओं हेतु भी पथप्रर्दशक होगी ।

पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय
(तरूण राठी)
कलेक्टर, दमोह

20 वर्षीय यात्रा

2000 — एम.जे.वी.एस. ने अपनी नीव रखी

2001 — "होप फॉर चिल्ड्रन" - एम.जे.वी.एस. ने बच्चों के साथ काम की शुरुआत की

2002 — म.प्र. के 3 जिलों में काम की शुरुआत

2003 — किसानों के साथ क्षमता निर्माण कार्य का विस्तार

2004 — युवा शिविर की शुरुआत

2005 — छात्रवृत्ति कार्यक्रम की शुरुआत

2006 — आदिवासी विकास कार्यक्रम की शुरुआत

2007 — बैगा जनजाति के साथ महाकौशल क्षेत्र में काम का विस्तार

2008 — वन अधिकार कानून पर किसानों की जागरूकता कार्यक्रम की शुरुआत

2009 — तमादी के सहयोग के साथ ग्रामीण पर्यटन कार्यक्रम की शुरुआत

की एक झलक

2010
महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ काम की शुरुआत

2011
एम.जे.वी.एस. को अपने काम को राष्ट्रीय स्तर पर फैलाने के लिए मंजूरी मिली

2012
मझगवां प्रशिक्षण केंद्र का नवीनीकरण

2013
जैविक खेती पर काम का गहन विस्तार

2014
ग्रामीण पर्यटन कार्यक्रम का 3 राज्यों में विस्तार

2015
युवाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत

2016
गो रुर्बन की शुरुआत- ग्रामीण और शहरी युवाओं को जोड़ने के लिए अभियान

2017
जय जगत यात्रा की तैयारी की शुरुआत

2018
बी.आर.एल.एफ. के तहत 10,000 किसानों के साथ गहन काम की शुरुआत

2019
इंटरनेट साथी कार्यक्रम की शुरुआत

प्रभाव

वन और भूमि अधिकार

2250
किसानों को

5000
एकड़ जमीन का अधिकार दिया गया

महिलाएं

233054
महिलाएँ म.प्र. के ग्रामीण जिलों में सशक्त हुईं

सामुदायिक अधिकार

78
ग्राम समुदायों को

3621.96
एकड़ जमीन का अधिकार दिया गया

जैविक खेती

12732
परिवारों ने जैविक खेती अपनाई

शिक्षा

65
स्कूलों की स्थापना की जिसमें 500 बच्चों को दाखिला दिया गया

स्वास्थ्य

1000
लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिला

पर्यावरण

52676
पौधे लगाए गए

आजीविका

1793
परिवारों को आजीविका के अवसर मिले

सरकारी योजनाएं

29675
परिवार सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हुए

हर्बल गार्डन

32785
हर्बल पौधे लगाए गए

सारांश

मानव जीवन विकास समिति के पिछले 20 वर्षों के विशाल कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में दर्शाया गया है। पहले अध्याय में एम. जे. वी. एस. के विज़न, मिशन, उद्देश्य और कार्य क्षेत्र एवं समुदायों आदि का वर्णन करते हुए संस्था का एक परिचय दिया गया है। इस सन्दर्भ के बाद, आगे के अध्यायों को एमजेवीएस के प्रत्येक कार्य क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। अध्यायों के नाम निम्नलिखित है:

1. युवा विकास
2. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन
3. महिला नेतृत्व
4. वन और भूमि अधिकार
5. आजीविका और आय सृजन
6. ग्रामीण पर्यटन
7. राहत कार्य
8. अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ- शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करना, इत्यादि।

प्रत्येक अध्याय में तत्सम्बन्धी कार्य क्षेत्र का प्रारंभिक परिचय एवं उसमें में किए गए कार्यों की प्रमुख झलकियाँ बताई गई हैं, जिसके अंतर्गत उस क्षेत्र की प्रमुख परियोजनाएं, कार्यक्रम, शिविर, अभियान आदि शामिल हैं। इसके आलावा प्रत्येक अध्याय में तत्सम्बन्धी क्षेत्र में कार्य का मात्रात्मक प्रभाव भी दर्शाया गया है। कार्यक्रमों और परियोजनाओं में शामिल लोगों की कहानियों और अनुभवों को भी दर्शाने का विशेष प्रयास किया गया है।

बाद के अध्यायों में पुरस्कार और मान्यताएँ, मीडिया कटिंग्स, संस्था के बोर्ड मेम्बर्स, सहयोगियों और शुभ चिंतको के नाम एवं संस्था का वित्तीय सारांश के साथ संस्था के अन्य विवरणों को दर्शाया गया हैं। "आजीविका और आय सृजन" अध्याय के अंत में सचिव निर्भय सिंह द्वारा लिखी गई एक सुंदर कहानी शामिल हैं, जिसमें संस्था के कार्यों का प्रभाव और आगे बढ़ने के तरीके के बारे में बताया गया है।

पुस्तक के अंत में सभी ऑफिस स्टाफ एवं कुछ फील्ड के कार्यकर्ताओं के अनुभवों को उनकी ज़ुबानी दर्शाया गया हैं। हम आशा करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ते हुए आप सुखद और आनंददायक महसूस करेंगे एवं एम. जे. वी. एस. के सरहानीय कार्य को समझ सकेंगे।

संस्था के बारे मे

मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर-सरकारी संगठन है, जिसका गठन सन् 2000 में किया गया था। अपने उद्देश्यों के प्रति सचेत रहकर, यह संगठन पिछले 20 वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों के वंचित समुदायों के लिए अथक रूप से कार्य कर रहा है।

कार्यालय के सदस्यों, क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और ग्रामीण समुदायों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके एवं जैविक खेती को बढ़ावा देकर और उनके लिए स्थायी आजीविका के साधनों का निर्माण कर, संस्था ने आम आदमी को मुख्यधारा में लाने का निरंतर प्रयास किया है।

समिति के प्रमुख कार्य क्षेत्र हैं - आजीविका सृजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला नेतृत्व, जन वकालत, आदि।

एम. जे. वी. एस., कटनी के बिजौरी मझगवां गांव में 30 एकड़ के खूबसूरत परिसर में स्थित है। इसमें 2 प्रशिक्षण हॉल, एक गेस्ट हाउस और एक पुस्तकालय है। 8 एकड़ के परिसर का उपयोग जैविक खेती के लिए किया जाता है। वहां लगाए गए 550 किस्मों के पौधों से परिसर की शोभा और अधिक बढ़ जाती है।

हमारा विजन

एक गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर एक अहिंसक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

हमारा लक्ष्य

जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लिए गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

हमारे उद्देश्य

- वनवासियों की आजीविका, समृद्धि, अधिकारों और सम्मान की रक्षा करना।
- एक स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- खेती को लाभकारी बनाने के लिए, जैविक खेती और वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।
- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य और ललित कलाओं का विकास करना।
- बच्चों के लिए सर्वांगीण विकास का वातावरण निर्मित करने का प्रयास करना।
- शांति और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त करना।
- विस्थापितों को उचित अधिकार प्रदान करना।
- महिलाओं के सम्मान और अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, ज्ञान और विज्ञान को बढ़ावा देना।
- रचनात्मक कार्य कर सामाजिक कल्याण के लिए काम करना और अन्याय और शोषण के खिलाफ जन चेतना जगाना।

हमारे 10 स्तंभ

- अहिंसक समाज
- लोक स्वराज
- आजीविका आधारित शिक्षा
- सामाजिक समानता और एकता
- स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति
- स्थाई कृषि विकास
- शोषण मुक्त समाज
- सुरक्षित एवं स्वस्थ पर्यावरण
- आपसी सहयोग सामंजस्य
- लोक कल्याण

संस्था का पंजीयन प्रमाण पत्र

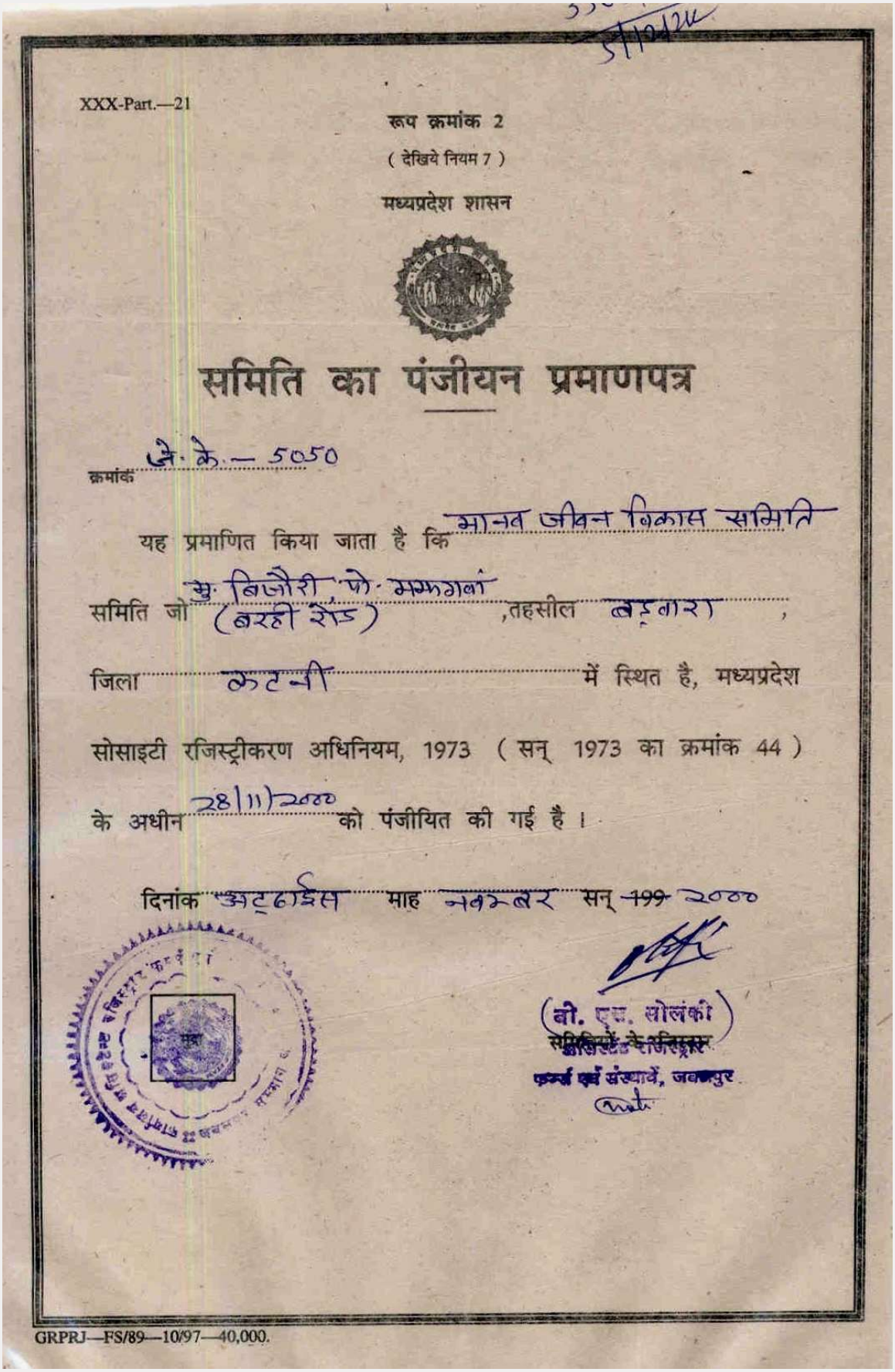

XXX-Part.—21

रूप क्रमांक 2

(देखिये नियम 7)

मध्यप्रदेश शासन

समिति का पंजीयन प्रमाणपत्र

क्रमांक जे. के. – 5050

यह प्रमाणित किया जाता है कि मानव जीवन विकास समिति

समिति जो मु. बिजौरी, पो. मझगवां (बरही रोड) ,तहसील बड़वारा ,

जिला कटनी में स्थित है, मध्यप्रदेश

सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1973 (सन् 1973 का क्रमांक 44)

के अधीन 28/11/2000 को पंजीयित की गई है ।

दिनांक अट्ठाईस माह नवम्बर सन् ~~199~~ 2000

(बी. एस. सोलंकी)
समितियों के रजिस्ट्रार
फर्म्स एवं संस्थायें, जबलपुर

GRPRJ—FS/89—10/97—40,000.

भौगोलिक कार्यक्षेत्र

मध्य प्रदेश

हमारा काम मध्य प्रदेश के निम्न जिलों में फैला हुआ है:

	जिला	ब्लॉक	गाँवों की संख्या
1.	कटनी	1	121
2.	डिंडौरी	5	600
3.	मंडला	6	720
4.	बालाघाट	1	60
5.	दमोह	2	80
6.	सतना	1	01
7.	उमरिया	1	05
8.	रायसेन	1	03
9.	पन्ना	1	20
10.	सीहोर	1	10
11.	मुरैना	1	03

निम्न समुदायों के साथ हम काम करते हैं:

- महाकौशल क्षेत्र में मंडला, डिंडौरी और बालाघाट में **बैगा** समुदाय के साथ
- कटनी, उमरिया और दमोह में **गोंड** समुदाय के साथ
- सतना और कटनी में **कोल** समुदाय के साथ
- सीहोर में **भील, भिलाला** समुदाय के साथ
- मुरैना में **सहरिया** समुदाय के साथ

समुदायों के बारे मे:

बैगा समुदाय एक आदिम जनजाति है। वे वनवासी हैं जो वनोपज आधारित आजीविका पर वास करते हैं। सालों से वे सरकारी योजनाओं और वन अधिकारों से बहुत दूर रहे हैं। इस समुदाय पुरुषों और महिलाओं के साथ समान दृष्टि से व्यवहार किया जाता है, लेकिन बच्चों के लिए शिक्षा की स्थिति खराब है। डिंडौरी में 80% आबादी बैगा है।

गोंड समुदाय के लोग कृषि करते हैं और निकटतम बाजारों में अपने उपज को बेचकर आजीविका आय करते हैं। इस समुदाय में कुपोषण की स्तिथि भयावय हैं और महिलाओं द्वारा अभी भी पर्दा व्यवस्था का पालन किया जाता है।

कोल समुदाय के लोग भी कृषि करते हैं, लेकिन वे ज्यादातर भूमिहीन हैं और खेतिहर मजदूर के रूप में कार्यरत हैं। भील, भिलाला समुदाय वनवासी समुदाय हैं।

युवा विकास

एम. जे. वी. एस., शुरुआत से ही न केवल ग्रामीण युवा बल्कि शहरी युवाओं के लिए भी यूवा विकास के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता रहा है। इन कार्यक्रमों में युवाओं को विभिन्न रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण दिए गए हैं। कई अन्य कार्यक्रमों में एम. जे. वी. एस. ने एक ग्रामीण आधार के रूप में अपनी भूमिका सुनिश्चित की है। एम. जे. वी. एस. की टीम का यह सतत प्रयास रहा है कि इस स्थान को अधिक गतिशील और युवाओं में प्रशिक्षण एवं जागरूकता फैलाने के लिए संस्था एक मंच प्रदान करे।

इन कार्यक्रमों में विभिन्न कैंप, कार्यशाला एवं फील्ड विजिट के साथ-साथ युवाओं को समय समय पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन भी दिया जाता है। हम अधिक से अधिक युवाओं को एक बेहतर भविष्य बनाने में सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। युवाओं के बौद्धिक एवं रोजगारपरक विकास के लिए संस्था द्वारा किये गए प्रयास प्रभावी साबित हुए हैं।

झलकियां

2014

अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर

सितंबर 2014 में, 7-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर का आयोजन एम. जे. वी. एस. परिसर में किया गया। भारत सहित 7 देशों से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। शिविर का लक्ष्य मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और मानव अधिकार रक्षकों को इकट्ठा करना, अहिंसा पर प्रशिक्षण सत्र देना, एक दूसरे को जानना और विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक संघर्षों का अनुभव साझा करना था।

यह शिविर प्रतिभागियों को एक अहिंसक सीमा रहित दुनिया के विचार को समझने एवं जानने में मदद करने एवं उसे बनाने में युवाओं की भूमिका पर लक्षित था। प्रतिभागियों ने मदारी टोला जैसे गांव का भ्रमण किया और वहां के समुदायों से की समस्याओं को समझा। शिविर गतिविधियों में श्रमदान पैदल मार्च व अन्य कार्य शामिल थे।

युवा शिविर

एम. जे. वी. एस. द्वारा आयोजित शिविरों ने युवा सदस्यों को ग्रामीण समुदायों और उनकी दैनिक समस्याओं को समझने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांव में विकास के संभावित समाधानों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित युवाओं और स्थापित ग्रामीण परिवारों के बीच संवाद स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यह शिविर लोगो में स्थापित करने में मदद करते हैं और इसमें युवा उनकी समस्याओं, साथ ही उनके द्वारा किये गए आधुनिक समाधानों को समझते हैं। इन संवादों के माध्यम से युवा ग्रामीणों की क्षमताओं को समझते और सम्मान करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच कार्यशाला

2016

2016 में, 10 भारतीय प्रतिभागियों और 10 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों के साथ एक रंगमंच कार्यशाला आयोजित की गई थी। जैसा कि सुनने में ही दिलचस्प अवसर लगता है, यह कार्यशाला सुश्री गौरी शिंदे जी, एक प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार, के द्वारा संचालित थी। इस कार्यशाला का उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके को समझने एवं लोगों के बीच उनका प्रचार करने का था। कार्यशाला के सभी प्रतिभागी अहिंसा विषय पर कहानी लेकर आए, और कटनी के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर उसका मंचन किया। इस सामूहिक प्रयास को स्थानीय लोगों एवं विभिन्न माध्यमों से जुड़े दूरस्थ दर्शकों द्वारा बहुत सराहना मिली।

शशि फेलोशिप कार्यक्रम

स्विट्जरलैंड के शशि फाउंडेशन की मदद से, एम. जे. वी. एस. ने गांधीवादी कार्य करने वाले व्यक्ति एवं संस्थाओं को फेलोशिप प्रदान करने का निर्णय लिया। संगठन ने ऐसे व्यक्तियों के चयन और उनकी दैनिक जीवन के लिए वित्तीय ज़रूरतों की देखभाल का निर्णय लिया| देश के विभिन्न राज्यों में स्तिथ लोग जो शांति और अहिंसा का प्रचार करते हैं और वंचितों के अधिकारों के लिए रचनात्मक रूप से कार्य कर रहे हैं, ऐसे लोगों का इस फैलोशिप के लिए प्रतिवर्ष चयन किया जाता है।

2020 तक, मध्य प्रदेश, केरल, उत्तराखंड, उड़ीसा, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश सहित 14 भारतीय राज्यों के लोगों का इस फेलोशिप में चयन हो चुका है।

गो रुर्बन

ग्रामीण एवं शहरी जीवन के बीच दूरियों को कम करने का एक प्रयास

गो रुर्बन की अवधारणा 2017 में मध्य प्रदेश में श्योपुर और शिवपुरी के सहरिया जनजाति बहुल चंबल क्षेत्र में श्री राजगोपाल पी. व्ही के साथ यात्रा के दौरान बनी। यात्रा के दौरान, ग्रामीण और शहरी दुनिया के बीच भारी विभाजन को देखते हुए, यात्रा के शहरी युवा प्रतिभागियों द्वारा ग्रामीण और शहरी जीवन शैली दोनों की विशेषताओं और कमियों को समझने के लिए इस युवा आंदोलन की स्थापना हुई।

अनुभवात्मक शिक्षा के साथ, ग्रामीण क्षेत्रों में शिविरों और अन्य गतिविधियों का आयोजन करते हुए गतिशील रूप से वास्तविक ग्रामीण जीवन का पता लगाने और अनुभव करने के लिए एवं जमीनी स्तर पर वास्तविकताओं की बेहतर समझ विकसित करने के लिए गो रुर्बन के विचार को विकसित किया। मुख्य रूप से, मानव जीवन विकास समिति इस युवा आंदोलन के ग्रामीण कार्यक्षेत्र की तरह भागीदार है।

यह आंदोलन एकता परिषद, मानव जीवन विकास समिति और भोपाल के युवा संगठन अंश हैप्पीनेस सोसाइटी द्वारा संयुक्त रूप से कार्यान्वित किया जा रहा है। 2017 में इस विचार की शुरुआत के बाद से, मध्य प्रदेश और गुजरात के ग्रामीण इलाकों में 7 गो रूर्बन शिविरों का आयोजन किया गया है।

- **मध्य प्रदेश में, 6 शिविर आयोजित किए गए - भीमकोठी, बसंत गुवान, म्रा, बिजौरी, रंजरा और कटनी - शिविर प्रतिभागी गोंड, बैगा, और सहरिया जनजातियों के साथ रहे और सीखे।**

- **गुजरात में आयोजित शिविर में अहमदाबाद, जूनागढ़, पोरबंदर, और मेहसाणा के आसपास बसे मालधारी समुदाय के जीवन को समझने के लिए यात्रा की।**

युवा प्रतिभागियों के अनुभव

रोजेला, इटली (प्रतिभागी, अंतरराष्ट्रीय युवा शिविर)

यह वास्तव में एक सशक्त और जीवन बदलने वाला अनुभव था। हमने गाँव के दौरे के दौरान स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत की और उन महिलाओं की सशक्त आवाज़ की ताकत सुनी जिन्होंने अपने गाँव को हिंसा से बचाया। हमने उस अविश्वसनीय ताकत को महसूस किया जब लोग एक साथ आते हैं। कैंप के अंत में मैंने महसूस किया कि "एक विशाल मानव परिवार" का सपना प्राप्त करने योग्य है। हालांकि यह एक लंबी यात्रा है लेकिन हजार मील की एक यात्रा भी एक कदम से ही शुरू होती है।

उमंग श्रीधर, भारत (प्रतिभागी, अंतरराष्ट्रीय युवा शिविर)

यह मानव जीवन विकास समिति ही था, जहां मुझे खादीजी शुरू करने का विचार आया। यह बहुत ही प्रेरणादायक जगह है। मेरे जीवन का यह एक अनोखा अनुभव था जहां मैंने 20 से अधिक देशों से आए लोगों का एक वैश्विक दृष्टिकोण जाना। मानव जीवन विकास समिति में मैंने गांधीवादी विचारों को जाना। मानव जीवन विकास समिति परिसर में आना मुझे हमेशा अच्छा लगा है। यहाँ मुझे श्रमदान करना और खाना पकाना अच्छा लगा। यह एक स्थान है जहां मैं गांधीवादी मूल्यों को जीवंत देख सकती हूं।

चारिका ठौकर, भारत (प्रतिभागी, गो रुर्बन)

पहले प्रतिभागी और फिर समन्वयक होने के नाते, मैंने गो रुर्बन को हर श्रृंखला के साथ विकसित होते देखा है। गो रर्बन ने मुझे नई संभावना और अपरंपरागत अनुभवों के साथ खुद को और अधिक तलाशने में मदद की है। गो रूर्बन के साथ मेरी यात्रा 2017 में पहले शिविर से शुरू हुई और आज तक गो रूर्बन की हर पहल का हिस्सा होना मेरे लिए अपने आप में सीख रहा है। ग्रामीण भारत में लोगों के जमीनी स्तर के संघर्ष जानकार और इनके साथ रहकर यह सीख मिलती है कि हम आसानी से खुश और संतुष्ट हो सकते हैं यदि हम भौतिकवादी दुनिया के पीछे नहीं भागते हैं और जीवन के छोटे क्षणों का आनंद लेते हैं।

राहुल शाह, भारत (प्रतिभागी, गो रुर्बन)

मैं हमेशा एक ऐसा व्यक्ति रहा हूं जो कभी भी अपने कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं निकल पाता। 2018 में मेरे पहले कैंप का अनुभव करने से मुझे जन कल्याण के प्रति सचेत होने में मदद मिली और मुझ में बहुत सारे बदलाव आए। इन शिविरों में जाना और स्थानीय लोगों के साथ रहने के दौरान मेरे कम्फर्ट जोन को अलग रखना एक सुखद अनुभव है जो मुझे भीतर से फिर से जीवंत कर देता है। इसके बाद मैंने ग्रामीण क्षेत्रों में और विभिन्न जनजातियों के लोगों के साथ बहुत समय बिताया है और ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं की खोज करते हुए महत्वपूर्ण चीजें सीखी हैं।

अनुराग राय, भारत (प्रतिभागी, अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच कार्यशाला)

इस कार्यशाला ने मुझे न केवल शांति और अंतर-समूह संबंधों की अवधारणा में एक दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद की, बल्कि इसने मेरी पारस्परिक योग्यता भी निर्मित की। एक ही स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय और आदिवासी युवाओं के साथ रहने से मेरा यह विश्वास दृढ़ हुआ कि एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए विविधता और पार-सांस्कृतिक सहभागिता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बहुसंस्कृतिवाद के बारे में मेरी जागरूकता और सराहना तब से लगातार बढ़ी है।

जॉय, स्विट्ज़रलैंड (प्रतिभागी, अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच कार्यशाला)

एम. जे. वी. एस. और अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच कार्यशाला के साथ मेरे अनुभव ने भविष्य के लिए मेरा रास्ता तैयार किया है। इस कार्यशाला और स्किट ने मुझे अपने देश और भारत के लोगों की समस्याओं के बारे में सोचने में मदद की। इस कार्यशाला के दौरान अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, मानव अधिकारों, शांति और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के मुद्दों पर मेरी समझ तैयार हुई। मुझे नए लोगों से मिलने और विश्व स्तर पर सोचने का मौका मिला।

सीमा आदिवासी, भारत (प्रतिभागी, गो रुर्बन)

एम. जे. वी. एस. से मैं कई सालों से परिचित थी क्यूंकि मेरे माता-पिता इस संगठन से जुड़े थे। 2017 में गो रुर्बन कैंप के दौरान मैंने बहुत कुछ सीखा। मेरी समझ और मजबूत हुई जब मैं यहाँ पर नए युवा साथियों से मिली। इस कैंप के दौरान मुझे यह विश्वास हुआ कि कोई भी व्यक्ति कमजोर नहीं है, चाहे कोई भी उम्र या लिंग हो। मैंने इस कैंप के बाद खुद में एक बदलाव देखा। मैंने भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया और ग्राम विकास की दिशा में काम किया।

प्रभाव

4000+

ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया

30

युवा शिविर म.प्र. के विभिन्न जिलों में आयोजित किये गए

200+

युवाओं ने गो रुर्बन कैंप में भाग लिया

7

गो रुर्बन कैंप आयोजित किए गए

14

भारतीय राज्यों में गांधीवादी कार्यशैली पर काम करने वाले

164

लोगों को शशि छात्रवृत्ति कार्यक्रम से लाभ हुआ

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की अर्थव्यवस्था स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि, वन, जल पर आधारित है। मध्यप्रदेश में कृषि मुख्य व्यवसाय है जो वर्षा पर आधारित है। कृषि में भूमि और प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और पर्यावरण को सुरक्षित, संरक्षित और बेहतर बनाने वाली प्रथाओं को अपनाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

पिछले 20 वर्षों से मानव जीवन विकास समिति समुदायों के अहिंसक स्थानीय संसाधन (भूमि, जल और जंगल) प्रबंधन क्षमता के निर्माण पर अथक प्रयास कर रही है। अत:, जैविक कृषि, खाद, कृषि भूमि के सतत विकास के उपाय, वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान, जल एवं कचरा प्रबंधन, सौर ऊर्जा, किसानों को प्रशिक्षण, जागरूकता अभियान एवं अन्य की वकालत एवं प्रचार करते हैं। संस्था समुदाय में चेतना उजागर और लोगों को लाभान्वित करने के लिए मुख्यधारा में लाने का प्रयास साथ ही पर्यावरण को बचाने का प्रयास कर रही है।

झलकियां

भूमि और जल प्रबंधन

जल और मृदा खेती के आधारभूत हैं। लेकिन जमीन का समतलीकरण और कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता यहां मुख्य समस्या है। कई उपाय और प्रयोग जैसे जैविक कृषि के साथ-साथ मेड़बंदी, नाडेप और भू नाडेप, जैविक खाद, वर्मी कल्चर इत्यादि सफलतापूर्वक लागू किए गए हैं। गैर कीटनाशक प्रबंधन प्रशिक्षण भी आयोजित किए गए हैं। भूमि समतलीकरण और मेड़बंदी के माध्यम से भूमि विकास के लिए सैकड़ों किसानों की सहायता की गई।

जल की अधिकता एवं अनुपलब्धता दोनों ही मिट्टी को प्रभावित करती है। मानव जीवन विकास समिति लगातार किसानों के साथ जल प्रबंधन क्षेत्र में कार्य कर रही है। सैकड़ों मोटर पंप, तालाब, कुए, चेक डैम, प्रभावी सिंचाई पद्धति इत्यादि का विकास जल की समस्या को निपटने और जल का सामुदायिक स्तर पर प्रबंधन करने के लिए किया गया है। इसी पर लोगों में समझ विकसित करने के लिए अनेक प्रशिक्षण एवं जागरूकता अभियान आयोजित किए गए हैं।

जैविक खेती - प्रशिक्षण और जागरूकता

मानव जीवन विकास समिति जैविक खेती को बढ़ावा एवं सहयोग करने के लिए गांव में अनेक माध्यमों से काम कर रही है। वर्षों से इसने जैविक कृषि विकास के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए हैं।परिचयात्मक दौरो का आयोजन किया गया। जैविक कृषि, बायोगैस, जैविक खाद, वृक्षारोपण, नर्सरी इत्यादि पर व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए बहुत सारी कार्यशाला केंद्र में हर वर्ष आयोजित की जाती है।

लोगों को सामुदायिक कृषि करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। जैविक कृषि के साथ एक से ज्यादा फसलें उगाना एक बेहतरीन विधि के रूप में उभरी हैं। इसके दोहरे फायदे, आत्मनिर्भरता और पर्यावरणीय सद्भाव के साथ खेती, है। कई कम लागत की कृषि तकनीक भी प्रशिक्षण में सिखाई गई। कई सरकारी योजनाओं और नीतियों का लाभ पहुंचाने के लिए इस केंद्र के प्रयासो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वृक्षारोपण

मानव जीवन विकास समिति में यह माना जाता है कि प्राकृतिक रूप से उगे और बढ़े पोधे सबसे मजबूत और टिकाऊ होते हैं। अत:, प्राकृतिक रूप से तैयार पोधों के संरक्षण और संवर्धन के दिशा में ईमानदार प्रयास किए गए हैं। पिछले 20 वर्षों के दौरान, हजारों - सैकड़ों वृक्षारोपण अभियान आयोजित किए गए हैं। इससे स्थानीय बीजो को बढ़ावा देने में भी मदद मिली है।

बीज बैंक

मानव जीवन विकास समिति के सहायता से बहुत सारे गांव एवं समाज स्तर के बीज बैंक विविध फसलों की सतत खेती को बढ़ावा देने के लिए बनाए गए हैं। स्थानीय बीजों की उपलब्धता ने बीज खरीदने के लिए बाजार की बजाए स्व-उत्पादन और स्थानीय किसानों की दक्षता एवं आत्मनिर्भरता बढ़ाने में भी मदद की है |

स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन

स्वच्छता अभियान शुरू से ही मानव जीवन विकास समिति के एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। यह प्रतिवर्ष अक्टूबर में गांव में सप्ताह भर अभियान और स्वच्छता प्रशिक्षण चलाती है। जैसा कि अपशिष्ट प्रबंधन एक प्रमुख समस्या है, स्वच्छता अभियान के दौरान नाडेप कंपोस्ट गड्ढों के माध्यम से जैविक खाद की प्रक्रिया को समझाया जाता है। 150 से अधिक ऐसे कंपोस्ट गड्ढे अभी तक कचरा इकट्ठा और प्रबंधित करने के लिए बनाए गए हैं।

जड़ी बूटी संग्रह एवं संवर्धन

वास्तव में सबसे अच्छी औषधियां वे हैं जो प्रकृति के अनुकूल है। केंद्र ने 1 एकड़ जमीन 350 तरह के प्राकृतिक रूप से उगे हर्बल और औषधीय पौधों के लिए समर्पित की है। इन औषधीय पौधों के स्वास्थ्य लाभो के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए वर्षों से बहुत सारी प्रदर्शनिया आयोजित की गई है।

प्रभाव

12633

परिवारों ने वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया

1117

किसान प्रशिक्षण आयोजित

5263

किसानों को भूमि समतल करने और मेड़बंदी में मदद की

1957

कम्पोस्ट पिट बनाए

675

सामुदायिक तालाब बनाए

80

गांवों की सहायता की गई बीज बैंक बनाने में

158

चेक डैम बनाए

123

कुओं का निर्माण किया

12732

किसान जैविक खेती को अपनाया

महिला नेतृत्व

गावों को अक्सर महिला नेतृत्व और स्वामित्व के मामले में सीमित समझा जाता है लेकिन मानव जीवन विकास समिति और इनकी महिला कार्यकर्ताओं की टीम ने इस धारणा को अपने निरंतर प्रयासों से चुनौती दी है। ग्रामीण समुदायों की महिलाओं का सशक्तिकरण कार्यशाला आयोजन, विशेषज्ञों के सत्र और प्रशिक्षणों के माध्यम से किया जाता है।

इस पहल के कुछ अपनी चुनौतियां है जो संगठन के प्रशिक्षकों और कार्यकर्ताओं की टीम द्वारा प्रशंसनीय रूप से हल किया गया है और दूसरों को भी इसका हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाओं को स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और स्वयं की आर्थिक गतिविधियों को शुरू करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

झलकियां

स्वयं सहायता समूह (SHG)

कई वंचित समुदायों में महिलाएं परिवारिक निर्णयों में स्वामित्व और आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है। मानव जीवन विकास समिति ने महिलाओं को अपना परिवार को सक्षम बनाने के लिए आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए उल्लेखनीय कदम उठाए हैं।

मानव जीवन विकास समिति ने कई गांवों में महिलाओं को आर्थिक गतिविधियां शुरू करने और स्वयं सहायता समूह बनाने में मदद की है। कई महिलाएं डेरी, फार्म, सिलाई, जैविक खेती, मधुमक्खी पालन, किराना इत्यादि कामों में संलग्न है। उनके व्यवसाय के लिए संसाधन जुटाने और उनकी सामाजिक सुरक्षा के लिए उन्हें ऋण और संसाधन प्रदान किए गए हैं। यह धन प्रबंधन महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला समन्वय

2016

2016 में, जय जगत यात्रा की तैयारी के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन जलगांव, महाराष्ट्र में किया गया था। इसमें 16 देशों से 100 से अधिक महिला प्रतिभागियों ने भाग लिया था। सम्मेलन के बाद, इन महिलाओं ने मानव जीवन विकास समिति के खेत का दौरा किया और संस्था द्वारा चलाए जा रहे आजीविका और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के बारे में जाना।

इंटरनेट साथी

2019

इंटरनेट साथी एम. जे. वी. एस. और फ़िया फाउंडेशन का एक संयुक्त परियोजना है जो कि मंडला और डिंडौरी जिले के 11 ब्लॉकों में चलाई गई। 330 इंटरनेट साथी प्रशिक्षित किए गए जिन्होंने अपने कामों में दो लाख 31 हजार महिलाओं को प्रशिक्षित किया। डिजिटल साक्षरता तक पहुंच महिला समूह को अपनी पहलों का अनेक तरीकों से विकास करने में सहायता की है। कार्यक्रम में बुनियादी स्मार्टफोन सुविधा एवं संचालन, इंटरनेट चालू और बंद करना और कैमरे का उपयोग करने का प्रशिक्षण शामिल था। इन साधारण किंतु महत्वपूर्ण प्रशिक्षण ने उनके व्यवसाय में व्यापक बदलाव किया है क्योंकि वह अब स्मार्टफोन को एक प्रभावी उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हुए ज्यादा लोगों तक पहुंच बना सकती हैं। इस कार्यक्रम ने उनके पहल और उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

द हंगर प्रोजेक्ट
(2010-2018)

महिला नेतृत्व संवर्धन कार्यक्रम

वर्ष 2000 में पंचायती राज शुरू करने वाला पहला राज्य मध्य प्रदेश था। राज्य के पंचायत चुनाव में 50% सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित थी। लेकिन लंबे समय से प्रचलित पितृसत्ता और सामाजिक रूढ़िवादिता का प्रभाव पंचायत में उनके प्रतिनिधित्व पर भी था और यह उन महिला प्रतिनिधियों के लिए एक मुख्य समस्या थी। महिलाओं को पंचायत में प्रतिनिधित्व होने के बावजूद भी घरेलू हिंसा, अन्याय और भेदभाव का सामना करना पड़ता था।

वर्ष 2010 में मानव जीवन विकास समिति ने स्वीप अभियान शुरू किया। अभियान के माध्यम से, संस्था ने महिला प्रतिनिधियों को संगठित करने और बेहतर नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाया। इस कार्यक्रम में विभिन्न सामुदायिक बैठकों, रैलियों और प्रदर्शनों के माध्यम से कार्य किया गया।

यह अभियान 50 पंचायतों के अधीन 116 गांवों में चला। अभियान ने महिलाओं के चुनाव प्रक्रिया में मजबूत भागीदारी को बढ़ावा एवं मदद करने पर ध्यान दिया। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

- गरीबों, आदिवासियों, दलितों और वंचित समुदायों के विकास के लिए लोकतांत्रिक शासन की स्थापना करना।
- महिलाओं को चुनाव प्रक्रिया के बारे में शिक्षित कर मजबूत करना|
- भयमुक्त और न्यायसंगत चुनाव सुनिश्चित करना और चुनाव में दलितों, सीमांत समुदायों और खासकर महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।

इस कार्यक्रम में 313 निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों, 600 साझा मंच महिलाओं और 22,795 अन्य महिलाओं को प्रशिक्षित और सशक्त किया गया।

प्रभाव

34

महिला सम्मलेन आयोजित किये गए जिनमें

423

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रशिक्षित और सशक्त किया गया

313

महिला स्वयं सहायता समूह निर्मित किये गए

550

महिला साझा मंच का गठन किया

330

इंटरनेट साथी प्रशिक्षित किए जिन्होंने

2,31,000

गाँव की महिलाओं को डिजिटल जागरूकता पर प्रशिक्षित किया

वन और भूमि अधिकार

कई आदिवासी एवं वंचित समुदाय दशकों से भूमि और संसाधनों के अधिकार से वंचित रहे हैं। वन विभाग ऐसे समुदायों का शोषण करके उनकी ज़मीनों पर कब्ज़ा करता रहा है एवं उनकी खाद्य फ़सलों को नष्ट करता रहा है। सदियों से जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी समुदाय वन विभाग के अत्याचार से भूमि अधिकार वंचित हो गए और उन्हें आजीविका और अस्तित्व के अवसरों को खोजने के लिए मजबूरन पलायन करना पड़ा। वन अधिकार अधिनियम 2006 में लाया गया एक ऐसा अधिनियम है जो आदिवासी समुदायों के लिए खेती योग्य भूमि एवं वन संसाधनों के अधिकार को सुनिश्चित करता है। आदिवासी समुदायों में इस वन अधिकार अधिनियम के बारे में जागरूकता का अभाव था।

एम. जे. वी. एस. कई वर्षों से ऐसे भूमिहीन समुदायों के संघर्षों के लिए अहिंसा पूर्वक पदयात्रा, जागरूकता अभियान और जनवकालत के माध्यम से संघर्ष कर रहा है। एकता परिषद का भूमि अधिकार के लिए अहिंसात्मक संघर्ष करने का लंबा इतिहास रहा है और बुंदेलखंड बघेलखण्ड और महाकौशल क्षेत्र में वंचित जनजातीय समुदायों के लिए इन संघर्षों को आगे बढ़ाने में संस्था की अहम भूमिका रही है।

झलकियां

2007

जनादेश 2007

जनादेश 2005 में शुरू किया गया एक राष्ट्रीय अभियान था, जिसका समापन 2007 में हुआ। जनादेश का अर्थ है "आम जनता का फैसला"। इस अभियान में भारत के सबसे गरीब एवं वंचित जनसमूहों को भूमि अधिकार दिलाने, विशिष्ट भूमि सुधार करने के लिए एवं भारत सरकार पर दबाव बनाने के लिए कई स्थानीय अभियानों को एक साथ लाने का लक्ष्य रखा गया था। ग्वालियर से दिल्ली तक 350 कि. मी. पैदल मार्च में हजारों आदिवासी और भूमिहीन किसान शामिल हुए। 25,000 पदयात्रियों द्वारा निकाली गई इस पदयात्रा के फलस्वरूप भूमि सुधार समिति का गठन किया। साथ ही, वन अधिकार अधिनियम वर्ष 2006 में पेश किया गया था। यह कानून भारत में औपनिवेशिक वन कानूनों की निरंतरता के परिणामस्वरूप दशकों से वन-निवास समुदायों के भूमि और अन्य संसाधनों के अधिकारों की सुरक्षा करता है। एकता परिषद की अगुवाई में जनादेश पदयात्रा एक बड़ा अहिंसक आंदोलन था, जिसे 2 दिसंबर 2007 को शुरू किया गया था।

2012

जनसत्याग्रह 2012

जनादेश के बाद, एकता परिषद ने 2012 में ग्वालियर से दिल्ली की ओर एक और पदयात्रा "जन सत्याग्रह" का आयोजन किया। इसमें 50,000 भूमिहीन और छोटे किसान ग्वालियर में एकत्रित हुए। इस यात्रा का समापन आगरा में हुआ जहां भारत सरकार के साथ राष्ट्रीय भूमि सुधार समझौता हुआ। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य भूमिहीनों को कृषि भूमि और बेघर लोगों को आवास हेतु भूमि देने के लिए एक कानूनी प्रावधान करना था।

आदिवासी अधिकार पदयात्रा

2014

वर्ष 2014 में 20 नवंबर से 10 दिसंबर तक एक 21 दिवसीय पदयात्रा आदिवासी पदयात्रा का आयोजन किया गया। यह मध्यप्रदेश के डिंडौरी जिले से शुरू हुई और पदयात्री 262 किलोमीटर की दूरी तय कर छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में पहुँचे। यात्रा का लक्ष्य वंचित आदिवासी समुदायों के जीवन में न्याय और शांति की स्थापना था। यात्रा के प्रमुख उद्देश्य वन अधिकार अधिनियम, पेसा कानून एवं खाद्य सुरक्षा अधिनियम इत्यादि जैसी सरकारी नीतियों के जमीनी कार्यान्वयन को समझना और नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार पर दबाव बनाने के लिए आदिवासी समुदायों को संगठित करना था।

ग्रामीण स्तर पर जन वकालत

एकता परिषद आंदोलन से जुड़े संगठन के रूप में, एम. जे. वी. एस. लगातार भूमिहीन आदिवासी समुदायों को वन और भूमि अधिकार सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत रहा है। एम. जे. वी. एस., प्रशासन द्वारा बलपूर्वक ज़मीन हड़पने के कारण समुदाय की समस्याओं को समझने के लिए गाँवों में सर्वेक्षण करता है। पंचायत समितियों और अन्य समुदाय के सदस्यों के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें उन्हें कानूनों के बारे में अवगत कराया जाता है। संगठन समुदाय के सदस्यों के लिए भूमि अधिकार की मांग के लिए मूलभूत मदद भी प्रदान करता है।

सफलता की एक कहानी

गिरवी रखी ज़मीन वापस मिली

यह कहानी कटनी जिले से 35 किमी दूर बड़वारा विकासखंड के चिरहुली गांव की है। इस गांव में 560 परिवार बसे हुए हैं, जिनमें से 250 आदिवासी हैं।

वर्ष 1964-65 में इस गाँव में भीषण सूखा पड़ा। गरीब आदिवासी परिवारों के पास खाने के लिए कुछ नहीं था और वे असहाय थे। इस अवसर को हथियाने के लिए, एक अमीर व्यक्ति ने सूखे से ग्रसित परिवारों को कुछ राहत सामग्री दी और उसके बदले में उस जमीन का 200 एकड़ अधिग्रहण कर लिया। कुछ समय बाद वह आदिवासी अपनी ही जमीन पर मजदूर बन गए। उस व्यक्ति के मृत्यु के बाद इस ज़मीन को मंदिर के निर्माण के लिए आरक्षित कर दिया गया। समय बदला लेकिन आदिवासी परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी जमीन पर मजदूर बने रहे।

यह मुद्दा वर्ष 2006 में एम. जे. वी. एस. के संज्ञान में आया और तब वहां एक सर्वेक्षण किया गया था। एम. जे. वी. एस. टीम ने तब समुदाय के सदस्यों की एक स्थानीय इकाई का गठन किया और 2-दिवसीय सरपंच प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें 40 गांवों के 112 सरपंच एकत्रित हुए। यह पहली बार था जब सभी स्थानीय ग्राम प्रधान सामूहिक चर्चा के लिए एकत्रित हुए थे। 200 एकड़ भूमि पर कब्जे का मुद्दा उठाया गया और सदस्यों ने सर्वसम्मति से इस बारे में मंदिर की पुजारी से बातचीत करने का फैसला किया। कुछ संवादों के बाद, पुजारी ने 18 आदिवासी परिवारों को अपने घर बनाने के लिए 22 एकड़ जमीन देने पर सहमति व्यक्त की। इस मुद्दे पर काम कर के समूह ने पुजारी के साथ लगातार संपर्क बनाकर रखा और जुलाई 2006 में, पुजारी ने आदिवासी परिवारों को खेती के लिए पूरी 200 एकड़ भूमि प्रदान कर दी। समुदाय को अपनी जमीन वापस मिल गई। मई 2007 में, 18 आदिवासी परिवारों ने अलग-अलग आवंटित 22 एकड़ जमीन पर अपने घरों का निर्माण शुरू किया। इस गांव में संवाद, दृढ़ संकल्प, जागरूकता और सामूहिक सक्रियता के कारण अहिंसक तरीके से जीत हासिल हुई।

रोजगार और आय सृजन

मानव जीवन विकास समिति ने अपनी स्थापना के बाद से, ग्रामीण समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में काम किया है। सरकार द्वारा शोषण, भूमि से भगाने और खाद्य फसलों को नष्ट करने की अनैतिक गतिविधियों ने ग्रामीण समुदायों को भीषण गरीबी की ओर धकेल दिया। भूमि अधिकार प्राप्त करने के बाद भी, भूमि के प्रभावी उपयोग का ज्ञान न होने की वजह से उन्हें इतनी फसल नहीं मिल पाती है कि वे अपने परिवार को पालने लायक पैदावार कर सकें। नतीजतन, वे अन्य गांवों और शहरों में पलायन करते हैं और उनमें से अधिकांश लोग मजदूर के रूप में काम करते हैं।

मानव जीवन विकास समिति का उद्देश्य है ऐसे वंचित समुदायों की मदद करना जिससे वे अपने परिवारों को स्वस्थ और खुशहाल रखने के लिए पर्याप्त आजीविका जुटाने जुटा सकें। एम. जे. वी. एस. का मानना है कि इस तरह के बदलाव से समुदायों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है और उन्हें अपने लिए प्रचुर संसाधन पैदा करने में मदद मिल सकती है। एम. जे. वी. एस. ने किसानों, महिलाओं और युवाओं के साथ कई स्तरों पर काम किया है और उन्हें विभिन्न कुशल और नवीन तकनीकों पर सशक्त और प्रशिक्षित किया है।

झलकियां

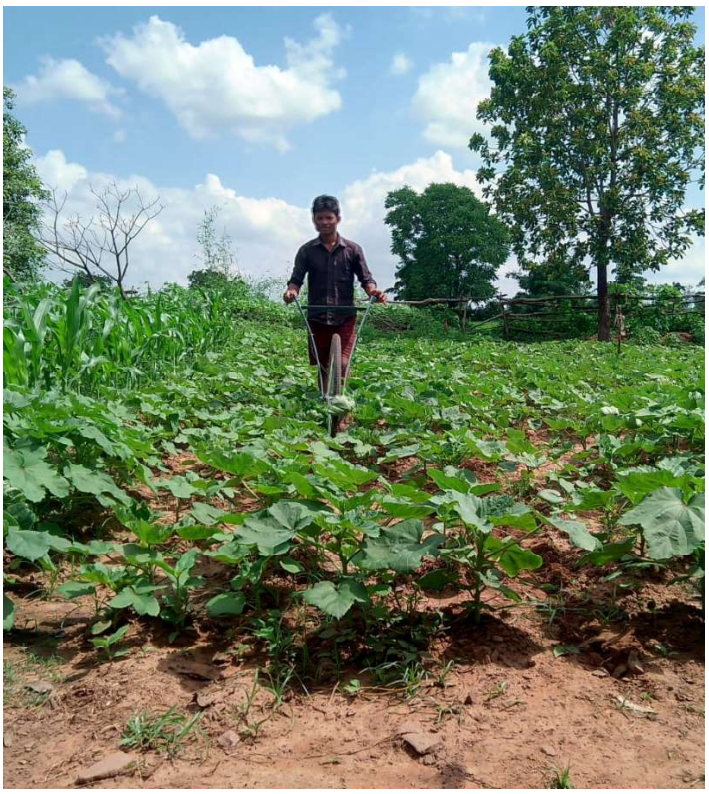

स्वयं सहायता समूह और ग्राम इकाइयाँ

एम. जे. वी. एस. का मानना है कि गांवों को सशक्त बनाने के लिए जरूरी है कि गाँव के सदस्य एक-दूसरे के साथ एकजुटता से काम करें और अपने स्वयं के व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत बनाएं। एम. जे. वी. एस. द्वारा इन आदिवासी गांवों में ग्राम इकाइयों और स्व-सहायता समूहों की स्थापना की जाती है। इन समूहों को फिर सरकारी योजनाओं और बैंकिंग सुविधाओं के बारे में जानकारी दी जाती है, जिसका वे लाभ उठा सकते हैं। एम. जे. वी. एस. इन स्व-सहायता समूहों को अपनी आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा के लिए बैंक खाते खोलने में भी मदद करता है।

जैविक खेती, प्रभावी भूमि उपयोग और अन्य आजीविका के स्रोत

मानव जीवन विकास समिति ने ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए विभिन्न गतिविधियां की हैं। किसानों में जैविक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए उन्हें खाद, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक कीटनाशक, तालाबों और बांधों के निर्माण और प्रभावी सिंचाई तकनीकों आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया है। इन तकनीकों पर प्रशिक्षण देने का उद्देश्य यह है कि किसान सीख कर स्वयं अपने कार्यों में कुशलता प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, अन्य आजीविका कार्यक्रमों जैसे बकरी पालन, मछली पालन आदि के लिए भी प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। 2014-15 में, एम. जे. वी. एस. ने कुछ समुदायों को बुनाई और कपड़ा बनाने का प्रशिक्षण भी दिया और उन्हें उद्योगों और बाजारों में उचित स्थान उपलब्ध कराया।

व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

2012-2017

एम. जे. वी. एस. ने 2012 में नेशनल काउंसिल ऑफ वोकेशनल ट्रेनिंग के साथ एक परियोजना शुरू की। इस परियोजना का उद्देश्य गांव के युवाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल प्रदान करना है। उनके लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण, सिलाई, इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन डिजाइनिंग, ड्राइविंग आदि के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन (BRLF)

2018

भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वतंत्र सोसायटी के रूप में भारत सरकार द्वारा भारत रुरल लाइवलीहुड फाउंडेशन की स्थापना की गई थी। इस संस्था का मुख्य कार्य केंद्र और राज्य सरकारों एवं सिविल सोसायटी के साथ मिलकर आजीविका के विभिन्न कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना है। भारत रुरल लाइवलीहुड फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण भारत को सशक्त बनाना है, जो कि अपने गरीब आबादी, विशेष रूप से आदिवासी जनजातियों के जीवन को सशक्त बनाने और सरकार और भारतीय लोकतंत्र में उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए, सिविल सोसायटी, भारत सरकार और विभिन्न राज्यों की सरकारों के साथ समन्वय में है।

एक स्थानीय उपस्थिति रखने वाले नागरिक समाज संगठनों के साथ मिलकर काम करना, बीआरएलएफ सुनिश्चित करता है कि वांछित परिणाम सही रणनीतियों के साथ-साथ प्रयासों के माध्यम से उत्पन्न होते हैं। BRLF देश की चौड़ाई में कई परियोजनाओं का समर्थन करता है, खासकर ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तेलंगाना और गुजरात में जो मध्य भारत का निर्माण करते हैं।

मानव जीवन विकास समिति को भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन की परियोजना के लिए अग्रणी संगठन के रूप में नियुक्त किया गया है। एमजेवीएस के साथ ही दो और संगठनों से मिलकर एक संघ का गठन किया गया जिसे बुंदेलखंड विकास गठबंधन नाम दिया गया। यह परियोजना मध्य प्रदेश के 2 जिलों- दमोह और पन्ना में चलाई जा रही हैं। इस परियोजना ने एमजेवीएस का कार्य क्षेत्र दमोह में तेंदूखेड़ा ब्लॉक है।

लक्ष्य 3 साल की अवधि में दो जिलों के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में (100 गांवों में 10000 घरों को लक्षित करने वाले) स्थायी आजीविका के मॉडल का विस्तार करना था - ताकि एफआरए के तहत सीमांत जनजातीय आबादी के अधिकारों को सुनिश्चित किया जा सके, जल विकास और भूमि विकास गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सके। उन परिवारों के लिए, जिन्होंने सामाजिक और न्यायसंगत तरीके से भोजन, पोषण और आजीविका सुरक्षा में सुधार के लिए स्थायी रूप से कृषि और ऑफ-फार्म आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा देकर, भूमि अधिकार प्राप्त किया है।

प्रभाव

385
किसानों के प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए

1300+
स्वयं सहायता समूह प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए

78
जन सुनवाई हुई

900+
जागरूकता अभियान आयोजित किए गए

260
प्रशिक्षु NCVT सत्र का हिस्सा रहे हैं

कुल मिलाकर
10,92,110
रुपये एकत्र किए गए और बैंक खातों में जमा किए गए

1060
स्वयं सहायता समूह बनाए गए

365
गांवों में

अल्ली दादा ने आधुनिक किसानी के तरीके सीखकर अपनी आय मे वृद्धि की

बड़वारा ब्लॉक के लखाखेरा गांव के अल्ली दादा 2005 में एम. जे. वी. एस. द्वारा आयोजित एक कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए थे। यह 3-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "गैरीबी उन्मूलन योजना" के तहत किया गया था। इसके बाद प्रशिक्षण से प्राप्त सभी सीखों को अल्ली दादा ने अपनी 3 एकड़ कृषि भूमि पर लागू करने का प्रयास किया। उनकी ज़मीन गाँव में स्थित थी। उन्होंने पहले भूमि को समतल किया और कई फलों के पेड़ पौधे लगाए। उन्होंने केवल अमरूद के पेड़ों से ही 3000 रुपये कमाए। उपजाऊ ज़मीन वाले क्षेत्र को थोड़ा ढकने के लिए उन्होंने बायोमास (सूखे पत्तों और टहनियों) का उपयोग किया एवं जल प्रवाह और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए भूमि-चेकिंग बांध बनाया और कई अन्य काम किए। उन्होंने अपनी भूमि पर किसी भी रासायनिक इनपुट का उपयोग करना बंद कर दिया। खेती के इन सभी वैकल्पिक तरीकों के साथ, उनकी वार्षिक आय कुछ वर्षों के भीतर 8000 रुपये से बढ़कर 20,000 रुपये हो गई। राष्ट्रीय आजीविका गारंटी की कपिलधारा योजना के तहत उनकी भूमि का चयन किया गया और उसके पास एक कुआं बनाने के लिए एक लाख रुपए दिए गए थे। 60 साल की उम्र में तब अल्ली दादा अन्य मजदूरों के साथ मिलकर कुआं खोदने का काम किया। वह अल्ली दादा की बुद्धिमान योजना और अथक श्रम ही है जिसका फल उन्हें मिला।

महिलाओं के एक स्वयं सहायता समूह ने कैसे एक बड़ा बदलाव लाने के लिए छोटे कदम उठाए

महात्मा गांधी सेवा आश्रम के समर्थन के साथ, एमजेवीएस टीम ने 2018 में रुन्नीपुर और शंकरा गांव में महिलाओं की एक स्व सहायता समूह (SHG) का गठन किया। SHG को उनकी जरूरतों का विश्लेषण करने के बाद एक प्रारंभिक धनराशि दी गई। शुरुवात में उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर उस धनराशि को बाँटा और अपनी जरूरतों पर खर्च किया। नतीजतन, धन में वृद्धि नहीं हुई। तब उन्होंने सामूहिक रूप से इस पैसे का प्रबंधन करने का फैसला किया। उन्होंने कुछ पैसे उधार के रूप में लिए और कुछ पैसे हर एक सदस्य ने खुद जमा किए और सबने मिलकर ब्याज दर तय की। कई महिलाओं को मधुमक्खी पालन, डेयरी फार्म, किराने की दुकान, सिलाई इत्यादि जैसी कई आर्थिक गतिविधियां करने में मदद मिली। एमजीएसए और एमजेवीएस टीम ने उनको आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित किया। अब वे अपनी आर्थिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक चला रहे हैं और अपने परिवारों को बनाए रखने के साथ-साथ SHG के ऋण का सामूहिक रूप से भुगतान करने के लिए पर्याप्त कमाई कर रहे हैं। समूह ने 16 महिलाओं को 150000 रूपए की राशि उधार दी। सभी महिलाएं अपनी रूचि अनुसार समूह को प्रति माह 1100 से 1550 रूपए का भुगतान कर रही हैं। वे परिवार में निर्णय लेने में अधिक आत्म-सम्मान और भागीदारी के साथ आर्थिक रूप से भी सशक्त हो रहे हैं।

बदलाव की कहानी

- निर्भय सिंह

कौन कहता है सफलता नही मिलती?

संघर्ष, संवाद और रचना के सिद्धान्त पर कदम-दर-कदम आगे बढ़ते हुए, सर्वप्रथम, हमने संघर्ष किया जिसमे जनादेश 2007 से लगातार जनांदोलन तक कदम मिलाया। पैदल चले, एक समय का खाना खाया, एक चटाई बिछाकर हाईवे पर ही अपनी रात गुजारी। पानी न मिलने के कारण, दो से तीन दिन के अन्तराल से, पानी का इन्तजाम जब किया गया, तब कही जाकर नहाए। परंतु कदम ताल टूटे नही। लगातार संघर्षों के बाद भी पंचायत से लेकर ब्लॉक, जिला, राजधानी; भोपाल व दिल्ली; तक अपना संवाद कायम रखकर बातचीत करते रहे जिसके कारण हमें इस काम में सफलता मिली और रचनात्मक कार्यो का प्रारंभ हुआ।

मै अभी नौ-दस साल से दमोह, कटनी, डिण्डौरी, मण्डला, बालाघाट और उमारिया जिलों के गांव गांव मे घूम रहा हूँ। इसके पूर्व कई सफलता की कहानियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत कर चुका हूं, जिन्हें मैने नजदीक से देखा हैं। इन जिलों के अंतर्गत, कई गांवों को वनाधिकार अधिनियम के तहत अभी तक लगभग 5000 एकड़ जमीन का हक प्राप्त हुआ है। इस अधीकृत भूमि पर अनेक जल स्त्रोत, जैसे नदि; कुँए; तालाब आदि, के माध्यम से सिंचाई कर जिस फसल की खेती की जा रही है, वह हमें चौकाने वाले आकड़े दे रही है। जिन खेतों पर कब्ज़े के तौर पर एक-फसली खेती के माध्यम से वर्षा तक अपने घर मे खाने की आपूर्ति आश्वासित कर, साल के बाकी दिनों मे पलायन कर अपनी आजीविका चलाने वाले यह आदिवासी परिवारों के पास आज अनाज रखने के लिए सुनिश्चित जगह हो गई हैं और अब उनके पक्के घर बनाने का समय आ गया है।

जैसे बमनौदा गांव में, नन्दलाल सिंह के खेत को देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है कि अब स्प्रिंकलर सिस्टम से खेतो की सिंचाई कर धान काटकर गेहूं, चना बोने की तैयारी की जा रही है। घर के आसपास हरी सब्जियों का बगीचा, फलदार पेड़, और फूलों की खेती तक स्प्रिंकलर सिस्टम जा पहुचा है। गांव के किसानों से चर्चा करने पर वे कहते है कि वह केवल देशी धान की ही बुवाई करते है जिसमे प्रमुख रूप से गजाकली, कालीधान आदि है।

आज भी यह लोग अपने खेतो मे रासायनिक खाद नही - अपने घरों में उपलब्ध गोबर से बनाई गई खाद का ही उपयोग करते है। यह और देखने को मिला जब मान सिंह यादव ने अपने घर का बनाया हुआ घी हमें दिखाया था। ऐसे कई छोटे बड़े हमारे उदाहरण सामने आ रहे है। धीरे-धीरे और किसान आधुनिकता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, और अब वे दिन दूर नहीं जब ऐसे और सुनहरे उदहारण देखने को मिलेंगे।

एक दिन जब धनगौर एवं भैसा गांव मे गांव की बैठक चल रही थी, तो बैसाखू आदिवासी ने कहा "हमे संगठन के द्वारा जो ताकत मिली है उसको हम जिन्दगी भर नही भूल सकते है। आज से 10-12 वर्ष पूर्व, साल मे 8-10 माह हम बाहर काम करने जाते थे, जहां न हमारे बच्चे पढ़ पाते थे, न ही हम अपने घरों को ठीक से रख पाते थे। परंतु वनाधिकार अधिनियम के तहत हमारी आर्थिक स्थिति में जो सुधार हुआ है वह सराहनीय है। अब हम अपने घरो मे रहते है, बच्चों को पढ़ाते है, और अपने खेतो में सम्मान पूर्वक खेती कर अपनी रोजी-रोटी चला रहे है।" एक और दिन की बात थी, जब पटेरिया माल के निवासी, खिलान सिंह के घर के चौगाने मे हम बैठे थे, तब खड़े हो, गर्व से दिखाया वह है 280 एकड़ ज़मीन जिसका हक़ 65 आदिवासी परिवारों को प्राप्त हुआ है। ऐसे कई कहानियाँ सामने आ रही है जिन्हे देख और सुन कर मेरा मन बेहद प्रफुल्लित हो जाता है।

यदि हम पूरे 5 हजार एकड़ जमीन की कीमत 3 लाख रूपये प्रति एकड़ भी मानकर चले तो इन आदिवासी परिवारों को अरबों रूपयों के आसपास की जमीन का मालिकाना हक प्राप्त हुआ है। हम अगर उत्पादन की बात करे तो - अगर जब से पट्टा प्राप्त हुआ है, तभी से सिंचाई के साधन बना ले जमीन पर तो, पहले जो एक-फसली मे उत्पादन 4 क्विंटल होता था, सिंचाई के बाद दो-फसली मे एक सीजन मे 7-8 क्विंटल उत्पादन प्रति एकड़ हो जाता है। अतः दोनो सीजन का 14-15 क्विंटल उत्पादन अनाज प्रति एकड़ प्राप्त होता है। और यदि हम एक वर्ष की उपजाऊ की कीमत 1500 रुपये प्रति क्विंटल ले, तो 7500 क्विंटल उत्पादन की कीमत कई करोड़ों के आसपास आती है। यह एक वर्ष की उपज का आंकड़ा है। यदि बीते 5 वर्षो का निकाले तो यह आंकड़ा कई अरबों तक पहुच जाता है। और यह 5000 एकड़ जमीन का ऑकडा है, वह केवल पट्टा प्राप्त होने का है। सामुदायिक एवं हैबिटेड राइट्स से और कई हजार एकड़ जमीन का अधिकर प्राप्त हुआ है जिससे ग्राम एवं ग्रामीण अपना जीवन व्यापन कर रहे है।

यह वो सामाजिक बदलाव के उदाहरण है, जहां पर उन आदिवासी परिवारों के रहन सहन मे बदलाव हुआ हैं, बच्चों के पढ़ाई का स्तर बड़ा है और महिलाओं का अपने ग्रह कार्यों के साथ स्वयं के खेतो मे उगाई गयी सब्जी का उपभोग कर रहे है। इन सामाजिक बदलाव से यह आदिवासी परिवार आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं। यह पर मौजूद हर व्यक्ति विशेष के मस्तक पर रचनात्मक कार्यो के लिए किया गया संघर्ष, पराक्रम एवं संवाद साफ झलकता हैं। मैं मानता हूँ यह वो संघर्षो के बीज जो आने वाले समय में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक बदलाव को जन्म देंगे।

ग्रामीण पर्यटन

भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत के साथ इसकी विविधता अद्वितीय है। ग्रामीण भारत अपने वास्तविक अर्थों में इस सांस्कृतिक विविधता और विरासत को प्रदर्शित करता है जिसे पूरी दुनिया में जाना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन, वहां पर्यावरण और पारिस्थितिकी के साथ समझौता किए बिना रोजगार पैदा करने का एक तरीका है। इस प्रकार, ग्रामीण पर्यटन गांव के विकास में योगदान देता है। यह इन ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीणों के लिए आय के वैकल्पिक स्रोत के साधन उपलब्ध कराता है।

एम. जे. वी. एस. का उद्देश्य वंचित समुदायों को स्थायी और अहिंसक आजीविका विकल्प प्रदान करना है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करने में पर्यटन कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और ग्रामीण क्षेत्रों में इसका विस्तार कैसे हो सकता है जैसे प्रश्नों पर काम किया गया। इन क्षेत्रों की जनसंख्या और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का काम इस कार्यक्रम के माध्यम से किया गया है। एम. जे. वी. एस. 2012 से तमादी और गरीमा इंडिया के साथ काम कर रहा है जिसमें ग्रामीण पर्यटन गांवों में सतत विकास को प्राप्त करने और आत्मनिर्भरता की दिशा में काम करने के लिए आधार प्रदान करता है।

गरिमा इंडिया

गरीमा इंडिया, एमजेवीएस और तमादी के बीच एक साझेदारी परियोजना है। 2012 से इस परियोजना की शुरुआत के बाद से, तमादी और एमजेवीएस संयुक्त रूप से ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से वैकल्पिक आय साधनों, ग्रामीण एकजुटता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आर्थिक सहायता के माध्यम से ग्रामीण समुदायों की स्थायी आजीविका को सशक्त और विकसित करने के लिए काम कर रहे हैं। परियोजना में पर्यटकों को दैनिक ग्रामीण जीवन दिखाकर एवं लोगों को एक दूसरे से जोड़कर इस लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

राजनीतिक और आर्थिक लाभ

ग्रामीण जीवन मे केवल कृषि से दैनिक आजीविका चलाना मुश्किल हो गया है। पर्यटन गतिविधियों के आयोजन के साथ, सांस्कृतिक आदान प्रदान से गई की कमाई का एक हिस्सा सीधे मेजबान गांवों की दैनिक आय का पूरक बनता है और गांव के विकास के लिए एक निवेश के रूप में कार्य करता है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य लाभ

कुल मिलाकर गाँवों की स्वच्छता में काफी सुधार हुआ है। गांवों में सामुदायिक पहल के रूप में मिट्टी के घर और शौचालय बनाए गए हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ

परियोजना के माध्यम से पर्यटन, आपसी संबंधों एवं सांस्कृतिक संपत्ति में बढ़ोतरी हुई है। इसने ग्रामीणों को आगंतुकों की मेजबानी करने में निपुण बना दिया है। आगंतुक अपने मेजबान परिवारों की झोपड़ियों में रहते हैं और उन्हें अपने दैनिक कार्यों में सहायता करते हैं, जैसे, कटाई में मदद करते हैं, स्कूलों में ग्रामीणों और बच्चों के साथ गहन चर्चा करते हैं। बातचीत, विसर्जन और संस्कृति के आदान-प्रदान की इस प्रक्रिया ने ग्रामीणों के भीतर दुनिया की बेहतर समझ बनाने में मदद की है और साथ ही ग्रामीणों की जीवन शैली में भी सुधार किया है।

प्रभाव

342
विदेशी पर्यटक

60
यात्रा समूहों ने कई गाँवों में यात्रा की

4
भारतीय राज्यों में पंहुच

- मध्य प्रदेश
- केरल
- राजस्थान
- उत्तराखंड

मरईकला की कहानी

मरईकला मध्य प्रदेश में उमरिया जिले का एक छोटा, मामूली गाँव है। भारत में तमादी कार्यक्रम के अंतर्गत बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान की पहाड़ियों में बसा, यह तमादी कार्यक्रम का पहला गाँव है।

कभी 2010 में इस गाँव की यात्रा के बाद से, यह गोंड आदिवासी गाँव विविध आगंतुकों को आकर्षित करता रहा है और परिणामस्वरूप - ग्रामीणों को कई तरीकों से सशक्त बना रहा है। मरईकला के महिला स्वयं सहायता समूह पूरी तरह से इन झुंड आगंतुकों का प्रबंधन करते हैं। ग्रामीण पर्यटन के कारण उन्हें मिलने वाली वित्तीय सहायता के साथ, वहाँ के ग्रामीण उस से कई गाँव-विकास कार्यक्रमों पर काम कर रहे हैं।

जैसे जैविक हल्दी की खेती करने से, मरईकला आर्थिक रूप से खुद को सक्षम और सशक्त बनाने में सक्षम हुई है। पर्यटन में सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने यहां स्वास्थ्य और स्वच्छता में भी उल्लेखनीय सुधार किया है। गाँव के बच्चे अब इन आगंतुकों से संवाद करने के लिए स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाने को कहते हैं। गाँव में पर्यटकों की बढ़ती संख्या ने सरकार का ध्यान आकर्षित किया, जिसके कारण गाँव ने अपना पहला आंगनवाड़ी केंद्र और कंक्रीट सड़क का निर्माण देखा।

इस पहल ने धीरे-धीरे मरईकला की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों में काफी सुधार किया है और इसे आत्मनिर्भर बनाया है। गोबरताल, बोरी, साँची, आदि, मरईकला जैसे गाँव है मध्य प्रदेश के, जो इस परियोजना और ग्रामीण पर्यटन के कारण लाभान्वित हो रहे हैं।

राहत कार्य

आपातकालीन राहत प्रदान करना एम. जे. वी. एस. के कार्यों के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। जिन दूरदराज के गांवों में एमजेवीएस काम करता है, वे प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त हैं और ऐसे क्षेत्रों में लोगों के लिए राहत बहुत देर से पहुंचती है। यह कार्य वर्ष 2004 में शुरू हुआ था जब बुंदेलखंड और बघेलखण्ड क्षेत्र में विशाल बाढ़ आई थी और उस क्षेत्र में मानव जीवन बिखर गया था। दिल्ली स्थित संगठन, गूंज, की मदद से एम. जे. वी. एस. ने बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में 20,000 परिवारों को कपड़े और राशन सहित राहत किट प्रदान की। इसके बाद एम. जे. वी. एस. ने नियमित रूप से कपड़ा वितरण और राहत कार्यों का काम शुरू किया और कई कार्यक्रम की शुरुवात की, जैसे- "काम के बदले कपड़ा" (काम के लिए पारिश्रमिक के रूप में कपड़े), "स्कूल-टू-स्कूल कार्यक्रम", महिलाओं के लिए सेनेटरी नैपकिन का वितरण, आदि।

हाल ही में कोविड महामारी के दौरान, एम. जे. वी. एस. की टीम ने उन हजारों प्रवासियों को राहत किट और आजीविका के साधन उपलब्ध कराने के लिए अथक प्रयास किए जो अपने गाँव वापस लौट कर आये थे।

प्रभाव

51762

व्यक्ति गूंज के साथ एम. जे. वी. एस. की वस्त्र वितरण कार्यक्रम से लाभान्वित हुए

14305	16400	16220	4837
पुरुष	महिलाएं	बच्चे	स्कूल

1050

परिवारों को बी. आर. एल. एफ. परियोजना द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान आपातकालीन राहत राशन किट प्रदान की गई

अन्य कल्याणकारी गतिविधियां

शिक्षा

एम. जे. वी. एस. का काम ऐसे समुदायों में है जहां लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हैं। ऐसे समुदाय दूर दराज़ के गाँवों में स्थित हैं जहाँ शिक्षा और स्वास्थ की सुविधाएँ नहीं पहुँच पाती हैं। ऐसे समुदायों के बच्चे बेहद उपेक्षित और वांछित रहते हैं। संस्थान की टीम ने अपने कार्य के दौरान जब इस स्थिति पर गौर किया, तब इस विषय पर भी कुछ करने का सिद्धांत लिया गया। स्कूलों की स्थापना की गई, स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति की गई और उन स्कूलों में गाँव के बच्चों का दाखिला करवाया गया। संस्था द्वारा 5 प्राथमिक स्कूल स्थापित किए गए हैं, जिसमें 475 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।एम. जे. वी. एस. वैकल्पिक शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक रूप से ज्ञान प्रदान करने के लिए विभिन्न नवीन शिक्षा प्रणालियों पर प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया जाता हैं।

स्वास्थ

लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति की जांच करने और चिकित्सा प्रदान करने के लिए एम. जे. वी. एस. द्वारा डॉक्टरों को गांवों में भेजा जाता है। संस्था द्वारा जड़ी-बूटियों की खेती से भी लोगों को कई स्वास्थ्य सुविधाएँ दी गई हैं। अपने कार्यक्षेत्र में पशु चिकित्सा का भी ध्यान रखा जाता है। गांव के लोगों को पशु चिकित्सा पर प्रशिक्षित भी किया जाता है।

सरकारी योजनाओं को सुनिश्चित करना

ग्रामीण समुदायों को खेती, बागवानी, खाद्य सुरक्षा, आजीविका, आदि के लिए कई सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कराने में एम. जे. वी. एस. की अहम भूमिका रही है। लोगो को सरकारी योजनाओं के लिए जागरूक करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। आंगनवाड़ियों और स्कूल प्रबंधन समितियों के साथ काम करके लोगो को बाल अधिकारों के विषय में भी जागरूक किया जाता है। लोगों के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं को सुनिश्चित किया गया है जैसे उज्ज्वला बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, वृद्धावस्था पेंशन, पीएम जन कल्याण योजना, रोज़गार गारंटी अधिनियम, पीडीएस कार्ड इत्यादि।

शराब सेवन का उन्मूलन

एम. जे. वी. एस. का मानना है कि गांधी विचार पर आधारित गाँव में नशीले उत्पादों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। इसलिए गाँवों में नशीले उत्पादों के सेवन के विरूद्ध कई जागरूकता अभियान आयोजित किए गए। इस तरह के मुद्दों को ग्राम सभा में भी लाया जाता है एवं महिलाओं, सरकारी अधिकारियों आदि के साथ चर्चायें की जाती है। वर्ष 2004 से हर साल अक्टूबर के पहले सप्ताह में नशामुक्ति पर जागरूकता अभियान आयोजित किया जाता है। इन प्रयासों से बड़वारा ब्लॉक के एक गाँव जमुनिया में पूरी तरह से शराब सेवन को खत्म कर दिया है।

पुरस्कार एवं सम्मान

2002

बारडोली रत्न

पर्यावरण

2009

होनहार पुरस्कार

सामाजिक कल्याण

2017

स्वामी विवेकानंद और सिस्टर मार्गरिट अवार्ड

सामाजिक कल्याण

2018

सम्मान पत्र

जल, जंगल, जमीन

2018

तिलका मांझी राष्ट्रीय सम्मान

सामाजिक कल्याण

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर | 24-Oct-2019 Page 4

कार्यक्रम • मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा ग्राम रिचकुडी में वन अधिकार कानून के तहत शिविर का आयोजन किया गया

वन अधिकार कानून की विभिन्न जानकारियों से अवगत कराया

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा ग्राम रिच्कुडी में वन अधिकार कानून के तहत शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अंकिता श्रुति ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि वन अधिकार कानून बने 11 वर्ष हो गए, लेकिन वास्तविक कब्जा धारी आज भी वंचित हैं।

विनोद पीएसआई ने कहा कि जिन लोगों को जमीन प्राप्त हो गई है, उस वन भूमि पर लोग रचनात्मक तरीके से खेती कर अपनी आजीविका चला रहे हैं। लोगों का पलायन रुका है। धनश्याम रायकवार ने उपस्थित लोगों को वन अधिकार कानून को बारीकी से समझाते हुए कहा कि व्यक्तिगत वन भूमि दावा फार्म के साथ सामुदायिक वन भूमि दावा फार्म भी ग्रामवासी लगाएं ताकि गांव के निस्तार के लिए अधिकार प्राप्त हो। जिसमें मवेशी चराने, पत्थर फोड़ने, लकड़ी लाने, वन उपज संकलन, ग्राम बासाहट, पौधरोपण, तालाब निर्माण, नदी नाले से निस्तार मिट्टी लाने, समाज के लिए जितने भी निस्तार होते हैं उन सभी निस्तारों के लिए वन भूमि प्राप्त करना है। सभी समाज के लोगों को मिलकर यह जमीन ग्राम पंचायत को प्राप्त होगी। कार्यक्रम में नरेश खटीक, मानसिंह, धनसिंह, मिलनबाई, प्रियंकाबाई, अवलेश, नंदनी, प्रतापसिंह, रोहित सहित अनेक लोग मौजूद थे।

मांगः वन क्षेत्र में रहने वाले लोगों को मिले अधिकार

जबेरा। जबेरा विधान सभा क्षेत्र के 80 ग्रामों में सामुदायिक अधिकारों के लिए अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन व उसके आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ग्रामीणों को निस्तार के लिए जमीन के हक की मांग की गई। इस दौरान धनश्याम रैकवार ने कहा कि जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का हम सभी को सुरक्षित रखते हुए रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोग में लेना है। इसके लिए जैव विविधता, घुमंतु जनजातियों के अधिकारी के साथ पंचायत के अंतर्गत आने वाले वनवासियों के लिए प्रदत्त कानून तभी सार्थक होगा जब वंचित समुदाय सशक्त होगा। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

भूमि और जल संरक्षण के लिए किया जा रहा जागरूक

तेंदूखेड़ा। इस तरह से बनाया गया पुल। • नईदुनिया

तेंदूखेड़ा। नईदुनिया न्यूज

मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रुरल लाइवली हुड फाउंडेशन के सहयोग से ब्लॉक तेदूंखेड़ा में ग्रामीणों को भूमि और जल संरक्षण के लिए जागरूक किया जा रहा है। वन भूमि प्राप्त आदिवासियों ने जंगल की प्राप्त भूमि के नाले में ही श्रमदान से मिनी स्टापडेम बना कर जल संरक्षण किया। जल संरक्षण से कुआं, बावली रीचार्ज होंगी और वनवासियों को सिचाई के अलावा पीने, खर्च के के साथ मवेशियों के लिए भी पानी उपलब्ध रहेगा। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि सभी किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ उनकी आय भी बढ़ेगी। उन्होंने बताया कि ग्रामीण काफी जागरूक होते हैं उनको केवल सुझाव और तरीका बताने वाले की जरूरत होती है। गर्मियों के दिनों में सरसैला गांव में पानी की कमी आगई थी। क्योंकि गांव से जो नाला निकला है उस पर स्टापडैम नहीं था और नाले का पूरा पानी बह जाता था। जिसे देखते हुए ग्रामीणों ने मिलकर यहां पत्थर और मिट्टी की मदद से एक देशी पुल बना लिया। जिससे नाले का पानी भी रुक गया और ग्रामीणों को ज्यादा श्रमदान भी नहीं करना पड़ा। श्रमदान करने वालों सीता रानी, भुजवल सिंह, रतन सिंह, विश्वनाथ सिंह, मोहन सिंह, नन्हे वीर, दुर्गा प्रसाद, बालकिशन, अनीता बाई का सहयोग रहा।

ग्राम पंचायत बमहोरी में अपनी समस्या सुनाने पहुंचे ग्रामीण

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया न्यूज)। मानव जीवन विकास समिति कटनी तेंदूखेड़ा ब्लाक के लगभग आधे गांव में कार्य कर रही है। सैकड़ों लोग इस समिति के माध्यम से लाभांवित होकर आज अपनी जीविका चला रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को ग्राम पंचायत बमोहरी में एक आयोजन किया गया जिसे जनसुनवाई नाम दिया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 से ज्यादा दूरदराज के हितग्राहियों ने भाग लिया और अपनी समस्या बताई। जनसुवाई में लगभग एक दर्जन ग्राम पंचायतों के सचिव और सरपंच भी मौजूद रहे जिन्होंने गांव के लोगों के आवेदन पर विशेष रुप से अमल करने की बात कही। जनसुवाई की शुरूआत सचिव निर्भय सिंह द्वारा की गई पूरे आयोजन का संचालन घनश्याम रैकवार ने किया। इस दौरान पूर्व बीडीसी डॉ परम सिंह और बमोहरी सरपंच संतोष यादव की भी मौजूदगी रही।

इन्होंने किया संबोधित : जनसुवाई आयोजन करने के पूर्व मानव जीवन विकास समिति द्वारा ब्लाक के साथ जिले के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया था, लेकिन अधिकारी नहीं पहुंचे। जिससे मानव जीवन समिति हितग्राहियों के आवेदन लेकर अधिकारियों से निराकरण की मांग करेगी। इस मौके पर चंद्रगोपाल कुशवाहा ने मौजूद ग्रामीणों को संबोधित भी किया।

तेंदूखेड़ा। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न पंचायतों के ग्रामीण। • नईदुनिया

विनोबा भावे 125वीं जयंती पर रोपे पौधे और संवाद कर दिये करुणा के संदेश

सत्य अहिंसा और करुणा भाव से ही दुनिया में आयेगी शान्ति न की कत्ल से : निर्भय सिंह

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति व एकता परिषद् कटनी के तत्वाधान मे कटनी, मण्डला, डिण्डौरी और दमोह जिले के कई गांवों मे स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं की मदद से गांधीवादी विचारक आचार्य संत विनोबा भावे की 125वीं जयंती मनाई गई। साथ ही बिजौरी स्थिति समिति मुख्यालय मे जड़ी-बूटियों व हर्बल बनाया गया था जिसमे 16 खण्ड बनाये गये है उसमे 350 प्रकार की जड़ी-बूटियां लगाई गई और शुक्रवार को संत विनोबा भावे 125वीं जयंती को यादगार बनाने के उद्धेष्य से इस हर्बल नर्सरी को आचार्य विनोबा भावे गार्डन नाम देकर याद किया गया और विनोबाजी की करूणामयी भाव को लोगों मे अपनाये जाने का प्रयास निरन्तर जारी रहेगा। लोगों को बताया गया कि सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना होगा यह भी बताया गया कि गांधी, विनोबा, जयप्रकाश ये है अंधकार के तीन प्रकाश हमे इनके बताये रास्ते को अपनाना होगा। भूदान अभियान के महानायक आचार्य विनोबा भावे को याद किया गया इन्होने गरीब, वंचित समुदाय को भूमि पर हक मिलना चाहिए। इस अभियान को सफल बनाने मे गांधीवादी विचारक राजगोपाल पीव्ही (राजाजी) का विषेष योगदान है। सरकार से बातचीत और संवाद के माध्यम से वन पर आश्रित लोगों को भूमि का हकदारी दिलाने निरन्तर प्रयास जारी है, इन्ही के मार्गदषन मे एकता परिषद से जुड़े स्वयंसेवी संस्था व कार्यकर्ता काम कर रहे है। कार्यक्रम मे कटनी से निर्भय दयाशंकर अभय कुमार तरूनेश फूलचंद आदि, दमोह से घनष्याम व टीम, मण्डला से रामकिशोर व टीम, डिण्डौरी से रामकुमार व टीम आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयंती समारोह मनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कटनी और बुदेलखंड डेवलपमेंट समिति के लोगों ने किया ग्रामीण क्षेत्र का भ्रमण, लोगों को पानी न मिलने से हो रही परेशानी

लोगों को पानी उपलब्ध कराने तालाब में किया श्रमदान

तेंदूखेड़ा। तालाब में खुदाई करते लोग।

तेंदूखेड़ा। नईदुनिया न्यूज

पानी की परेशानी

मानव जीवन विकास समिति कटनी और बुंदेलखंड डेवलपमेंट के निर्भय सिंह ने वनांचल क्षेत्रों का भ्रमण किया। उन्होंने आदिवासियों के लिए पानी की समस्या को दूर करने के लिए जनसहयोग से व्यवस्था करने की अपील की है। जिसमें एकता परिषद के सदस्य भी मौजूद रहे। जिन्होंने तेंदूखेड़ा के पटेरियामल, हर्रई, चहना, कमनोदा, भैंसा के साथ अन्य वनांचल क्षेत्रों का भ्रमण किया और वन भूमि के साथ ग्राम पंचायत की जगह में बने तालाबों और मेड़ों में जाकर श्रमदान भी किया। इस अवसर पर श्री सिंह ने कहा कि जल संरक्षण के लिए लोगों के साथ मीटिंग कर श्रमदान के साथ जल संरक्षण के गुण बताए जा रहे हैं कि ग्राम व ग्राम पंचायतों के नजदीक बने तालाबों का गहरीकरण गाद निकासी के साथ मेढ़ मरम्मत कर जल संरक्षण किया जा सकता है। बिना ग्रामीणों के सहयोग से गांव में सकारात्मक कार्य नहीं हो सकता जनभागीदारी से किये गये कार्यों में लोगों को अपनत्व की भावना बनी रहती है और लोग इसी भावनात्मकता के साथ प्रबंधन व देखरेख में रुचि रखते हैं। एकता परिषद के सदस्य सतीश मेहता ने कहा कि अनुचित नीतियों से उत्पन्न हुआ बुन्देलखंड का जल संकट अब इसे उचित नीतियों से दूर करना होगा। जलवायु बदलाव के इस दौर में मौसम व बारिश की प्रवृत्ति पहले से बदल रही है। जिस समय वर्षा की जरूरत व उम्मीद है उस समय वर्षा नहीं होती है। पर जिस समय जरूरत नहीं होती है उस समय अधिक वर्षा होती है और कभी-कभी ओले भी गिर जाते हैं। यह एक ऐसी समस्या है जिस पर हमारा बहुत नियंत्रण नहीं है। ब्लाक समन्वयक घनश्याम प्रसाद ने कहा कि जलसंकट उग्र होने का दूसरा बड़ा कारण अनुचित नीतियां हैं या अनुचित क्रियान्वयन है। जल संरक्षण की बहुत समृद्ध परंपराएं बुंदेलखंड में सैकड़ों वर्षों से रही हैं।

सागर, गुरुवार 05 दिसंबर, 2019 | 06

विदेशियों ने ग्रामवासियों से जैविक खेती की जानकारी ली

भास्कर संवाददाता। तेंदूखेड़ा

मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन दिल्ली के सहयोग से तेंदूखेड़ा ब्लॉक में गांव में सर्वे का काम कर रही है। जिसमें लोगों की आजीविका, कृषि आधारित गैर कृषि आधारित काम, वनवासी आदिवासियों 13 दिसंबर 2005 के तहत काबिज लोगों को पट्टे दिलाने की पैरवी, के साथ ही वन भूमि हक प्रमाण पत्र प्राप्त लोगों को भूमि पर रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करना है।

घनश्याम प्रसाद रायकवार ने बताया कि वनवासी द्वारा अहिंसात्मक संघर्षों से प्राप्त वन भूमि को देखने के लिए इक्वाडोर से फातिमा पिनांगो, विलमाचांटा, एलसेलवाडोल, जोशुआ इंडोनेशिया, मोलेटेलोमुहाले, दक्षिण अफ्रीका मोहम्मद रहमान, बंगलादेश मेलिसामेलानो, फिलीपींस, यूपी बृजेंद्र, साहिल, मोहसिन भोपाल ने आकर ग्राम सेहरी, फुलर में मोतीसिंह, रामचरण सिंह, देवी सिंह, सविता सहित अन्य लोगों के घर जाकर जानकारी ली। ग्रामीणों ने बताया कि उन्हें उबड़-खाबड़ जमीन मिली है। उसको समतलीकरण कर फलदार पौधे लगाने के साथ मेंढ़ बंधान अपने श्रम से किया है। जिससे जल संरक्षण होगा। हम लोग परम्परागत कृषि कार्य कर रहे हैं। और दूसरे किसानों को भी करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

कटनी जिला | जबलपुर, रविवार 15 फरवरी 2015 | हरिभूमि | 12

250 किसानों को मधुमक्खी पालन के लिये मिला प्रशिक्षण, मानव जीवन विकास समिति की पहल

शहद की खेती से संवरेगी तकदीर

परम्परागत खेती करते आ रहे किसानों के लिये अब खेती से ही उन्नति और खुशहाली के द्वार खुले है। समाज सेवा मे सक्रिय मानव जीवन विकास समिति के तत्वाधान में 10 गांव के 250 किसानों को मधुमक्खी पालन के लिये प्रशिक्षित किया गया है। समीपस्थ ग्राम समिति के मझगवां बिजौरी स्थित कार्यालय मे गत दिवस कलेक्टर विकास सिंह नरवाल की मौजूदगी मे 25 किसानों को बॉक्स वितरित किये गये। मधुमक्खी से भरे हुये बॉक्स प्रशिक्षित किसानों की तकदीर बदलेंगे। समिति का यह प्रयोग सफल रहा तो। आगे भी इसका विस्तार करते हुये और किसानों को लाभान्वित किया जायेगा।

हरिभूमि न्यूज, बड़वारा।

विदेशी मेहमान बने गवाह

मीडिया कवरेज

Greeting every tourist with a smile

TRAVELLERS' HAVEN Rural tourism has grown by leaps and bounds in Maraikala village where every tribal is adept at hosting foreigners

HT SPECIAL

Ritesh Mishra
ritesh.mishra@hindustantimes.com

Foreigners interact with the Gond tribals and engage in rural activities such as farming and gazing. Till now, more than 350 tourists from different cities, including France, Switzerland, Poland, Canada and the US have lived in the village. HT PHOTOS

MARAIKALA (UMARIA): When a 45-year-old French woman set foot in the Maraikala soil in 2010, little did she know that she was pioneering rural tourism in the village.

The woman, who visited the hinterland through the farmers' union Ekta Parishad and lived with the peasants, became one of the first few foreigners to flock to Maraikala.

Ever since, this nondescript village that is nestled in the mighty hills of Bandhavgarh National Forest (buffer zone), has been attracting thousands of foreigners to its haven.

In this village, there are 81 Gond tribal families and every family is adept at hosting foreign tourists, who live with the tribals for nearly a week.

"Before a tourist visits the village, we are informed about it and we organise a meeting. A menu is prepared for the whole week and we discuss what we will do for the entertainment of the tourists," says Ram Kali Gond, a resident of the village.

Another resident Kalsotia Gond says they use farm produce to make food for the tourists.

"We use vegetables which we grow in the farms. Nothing except sugar is purchased from the market," he says.

According to Jaywanti, another resident of the village, most of the tourists enjoy tribal food, ladoos made of mahua, mahua puri and other jungle food.

The villagers have come together to build mud houses and toilets for the tourists.

One of the tribals Sunkhiya says the foreigners want to live in mud houses and eat food that has less spice and salt.

According to the residents, alcohol, non-vegetarian food and cigarettes are not allowed in the village.

The money that the tribals earn from every visit is deposited in the account of a self-help group of the village and distributed among the members.

"Each family earns a handsome amount of ₹3,000-5,000 in each visit," adds Jaywanti.

The foreigners also play with the tribals and engage in rural activities such as farming and gazing.

Till now, more than 350 tourists from different cities, including France, Switzerland, Poland, Canada, USA, have lived in the village.

France-based non-governmental organisation Tamadi, which promotes rural tourism, encourages foreigners to visit the village with the help of Manav Jeevan Vikas Samiti and Ekta Parishad.

Tamadi has also recruited a guide and a translator for the tourists.

Yann Forget, who works as the translator, says tourism usually has bad consequences on the local landscape, damages the environment, leads to social and economic exploitation.

Forget says the locals usually get only menial jobs while the profits go to big companies that organise these trips.

According to Forget, tourists usually have fewer interactions with locals except waiters, porters and taxi drivers.

"The concept here is to reverse the situation: maximise interactions and minimise potential damages. The tourism is managed by the villagers themselves. Besides, this concept is being practiced in several countries such as Mali, Turkey, Madagascar, Tanzania, Tunisia, etc. This has also allowed direct exchanges between the people of these countries," he says.

Recently, state chief election commissioner R Parasuram visited Maraikala and appreciated the villagers.

Impressed by the success of the village, other Gond tribal villages such as Samarkoini and Kilhari have also begun promoting rural tourism.

> BEFORE A TOURIST VISITS THE VILLAGE, WE ORGANISE A MEETING. A MENU IS PREPARED FOR THE WHOLE WEEK AND WE DISCUSS WHAT WE WILL DO FOR THE ENTERTAINMENT OF THE TOURISTS
> RAM KALI GOND, resident

> THE CONCEPT IS TO MAXIMISE INTERACTIONS (WITH LOCALS) AND MINIMISE POTENTIAL DAMAGES (TO THE ENVIRONMENT). THIS CONCEPT IS ALREADY PRACTICED IN SEVERAL COUNTRIES
> YANN FORGET, translator for tourists

Youth from Sweden, Colombia participate in Peace Camp

Participants at inaugural function of 4-day Youth Peace camp.

Staff Reporter

A FOUR-DAY youth Peace Camp for 'Building Bridges across Rural and Urban Youths' started at *Manav Jeevan Vikas Samiti* campus at Katni. This camp is organised by Ekta Parishad in collaboration with Standing Together to Enable Peace (STEP) and Gandhi Smriti Darshan and Darshan Samiti. The camp will conclude on July 7. .In this camp 25 urban youths are participating from Delhi, Manipur, Sweden and Colombia Also 15 rural youths from Bhopal, Umaria and Katni. Youth learned lessons of nonviolence through the success story of Ekta Parishad land rights struggles. They also learned the importance of Non violence through Games and socio- cultural activities. This camp was co-ordinated by the Aneesh Thillenkery, National Convener of Ektaparishad, Nirbhay Singh, Secretary MJVS, and Samual from STEP. It is an initiative dedicated to building of a just and peaceful society that is free non-violent and sustainable. Main objectives of the organisation is sustainability, non-violence and compassion, universal and differentiated responsibility, reflective action, freedom with responsibility. STEP is a community of people with itch in their conscience to take personal steps to transform themselves and the world that they live in. To share ideas, draw inspiration from other people's personal journeys and foster community by sharing resources for creating a world based on non-violence, universal responsibility, sustainability and peace such youth camp plays a vital role.

Ekta Praishad is being organising such rural youth peace camp in Madhya Pradesh which witness participation from national and international students all over the world who wants to experience rural culture of the State.

एक फ्रांसीसी समाचार पत्र में तमादी का न्यूज़ कवरेज

Des hôtes bien en phase avec le gîte de la Petite Peltanche

En posant leurs valises au gîte de Jeanne-Chantal Chauvet et Frédéric Loquais, ces représentants de l'association Tamadi, venus de Tanzanie, Madagascar, Tunisie, Inde ou encore de Turquie ne sont nullement dépaysés. En effet, si le panonceau Accueil Paysan fraîchement apposé sur la ferme de la Petite Peltanche mentionne : « Pour des vacances autrement », celui de Tamadi spécifie : « Des voyages solidaires en milieu rural ».

En fait, deux structures qui se rapprochent, qui font et proposent un peu les mêmes choses, des choses simples, autour du tourisme rural, avec finalement une même philosophie. « Mais si aujourd'hui nous avons des hôtes venus des quatre coins de la planète, habituellement on est plus sur du tourisme local. Nous accueillons de nombreux Nantais qui viennent ici se ressourcer », précise Jeanne-Chantal.

Repères. L'association Tamadi a été créée en 2005 et adhère elle aussi à ATES (Association pour le tourisme équitable et solidaire). « Elle est animée d'une forte volonté de mettre en place de courts séjours à thématiques paysannes, dans la région de Nantes, Toulouse et en Wallonie. En s'adressant à des voyageurs à la découverte de ce qui se fait en agriculture familiale, autour d'une alimentation de qualité, Tamadi se rapproche bien de l'esprit d'Accueil Paysan », précise sa directrice Véronique Dave. Tamadi, tél. 02 40 58 10 73, www.tamadi.org

L'espace d'une semaine, ces bénévoles associatifs de Tamadi sont venus s'imprégner d'un accueil et d'un tourisme rural qu'ils veulent promouvoir dans leur pays. Au centre, la directrice Véronique Dave.

समिति के पदाधिकारी

श्री बद्री नारायण नरडिया
अध्यक्ष

श्रीमति सरोज पाण्डेय
उपाध्यक्ष

श्री निर्भय सिंह
सचिव

श्री संतोष सिंह
सह-सचिव

श्री अनीश कुमार
कोषाध्यक्ष

सुश्री शोभा तिवारी
सदस्य

श्रीमति सुशीला दीक्षित
सदस्य

श्री राजगोपाल पी.व्ही.
सदस्य

श्री मोहनदास नागवानी
सदस्य

श्री धर्मदास सिंह
सदस्य

सुश्री कस्तूरी पटेल
सदस्य

श्री करूणा निधान सिंह
सदस्य

श्री तम्मा गड़ारी
सदस्य

टीम के सदस्यों के अनुभव

अभय पटेल (वित्तीय प्रबंधक)

मैं समिति से 5 कि.मी. दूर, भदौरा गांव के किसान परिवार से हूँ। 4 वर्ष हायर सेकेण्डरी विद्यालय में अध्यापन कार्य के बाद 2008 में एम. जे. वी. एस. आया और यहाँ पर मुख्य रूप से वित्तीय प्रबंधन का दायित्व मिला है।

इसके अतिरिक्त, तमादी प्रोजेक्ट के तहत रूरल टूरिज्म की व्यवस्था व आवश्यकतानुसार संस्था के अन्य कार्यों में भी मेरी भूमिका रही है। समिति से जुड़ने के बाद, स्वयं को सही दिशा में बढ़ते हुए महसूस किया है, साथ साथ समिति को भी हर क्षेत्र में बढ़ते हुए देखा है। 12 वर्षों की इस जीवन-यात्रा का अनुभव का विवरण करना कठिन है। यह संस्था, एक समाज सेवी की सीखने की एवं समाज के लिए कुछ करने के लिए सबसे उचित जगह है। मैं समिति व आप सभी को आभार व्यक्त करता हूँ। समिति को अभूतपूर्व 20वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ। सादर जय जगत।

दयाशंकर यादव (प्रशिक्षण केन्द्र प्रबंधक)

मैं सन् 2000 से एम. जे. वी. एस का हिस्सा रहा हूं। शुरू में मैंने एक नर्सरी तैयार की थी और 3-4 साल तक सेंटर में यहां वृक्षारोपण की गतिविधि को देख रहा था। हमने सागौन, बांस, आंवला और अन्य फलों के पेड़ जैसे बहुत पेड़ लगाए। शुरू में बाजार से पौधों के रोपे लाते थे। लेकिन मेरे आने के बाद, हमने अपनी नर्सरी तैयार की और पौधे बेचकर भी आमदनी अर्जित की। मैंने कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी किए। अब मैं यहां आने वाले अतिथियों के लिए सभी आवास की व्यवस्था को संभालता हूं। मैंने पिछले कई वर्षों से एम. जे. वी. एस को विकसित होते देखा है। मैं यहां एक कर्मचारी की तरह महसूस नहीं करता- यह मेरे घर जैसा है और मैं यहां जो कुछ भी करता हूं वह मेरा जुनून है। मैं स्वच्छता के बारे में भी बहुत विशेष हूं! इसलिए मैं सुबह यहां के सभी सफाई कामों का ध्यान रखता हूं। हमारे यहाँ एक हर्बल गार्डन भी है और मैं हर्बल प्रक्रियाओं के माध्यम से रोगियों का कई प्रकार से उपचार भी करता हूँ।

रामकिशोर चौधरी (परियोजना प्रबंधक)

मैं 2010 से एम. जे. वी. एस. के साथ कार्यरत हूं और पिछले 10 वर्षों से मैं विभिन्न परियोजनाओं का हिस्सा रहा हूं। मुझे संगठन की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से बहुत कुछ सीखने को मिला और मैं निर्भय जी को धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे विभिन्न गतिविधियों का अभिन्न अंग बनाया। मैं यहाँ पर प्रलेखन और रिपोर्ट लेखन कार्य को प्रमुखता से देखता हूँ। कई प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखते समय मुझे हमारे काम की गहराई और महत्व का बेहतर एहसास हुआ। मैं 2014 से 2018 तक द हंगर प्रोजेक्ट के साथ और 2019 से इंटरनेट साथी प्रोजेक्ट के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ हूँ। हमारे संगठन के पास एक विशाल परिसर और प्रचुर संसाधन हैं और यहां आने वाले सभी अतिथियों का हमेशा स्वागत रहता है। एम. जे. वी. एस. अन्य संगठनों को प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में भी समर्थन करता है। संस्था के विविध कार्यो से हमारा निजी अनुभव भी बढ़ाता है और हम हमेशा इसके लिए समर्पित होकर काम करते हैं।

तरूनेश कर्पूर (कार्यालय सहायक)

मैंने फरवरी 2013 से समिति के साथ काम करना शुरू किया। शुरुवात में 2015 तक मैंने एन. सी. वी. टी कार्यक्रम में काम किया और युवाओं को कंप्यूटर सम्बंधित प्रशिक्षण दिया। इसके बाद मैंने द हंगर प्रोजेक्ट के साथ काम किया, जिसमें हमने 15 पंचायतों के साथ काम करके महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों को सशक्त किया। फिर मैंने ज्यादातर संस्था का डाक्यूमेंटेशन का काम भी करना शुरू किया। यहां काम करते हुए मैंने जैविक खेती के बारे में बहुत कुछ समझा। मैंने इतने सालो में एम. जे. वी. एस. को धीरे धीरे बढ़ते और कई रचनात्मक कार्यक्रम करते हुए देखा है। इन कामो का प्रभाव यह रहा कि व्यावसायिक प्रशिक्षण परियोजना के कई छात्रों को अब नौकरी मिल गई है और टी. एच. पी में प्रशिक्षित कई महिलाओं ने विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को अपनाया है।

चंद्रपाल कुशवाहा (परियोजना प्रबंधक)

भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन के सहयोग से मानव जीवन विकास समिति द्वारा संचालित आजीविका परियोजना के तहत मैं जनवरी 2020 में MJVS का हिस्सा बना एवं संस्था द्वारा संचालित हो रही गतिविधियों के बारे में जाना और समझा। पिछले 10 महीनों के अनुभव के आधार पर मैंने जाना की संस्था का मुख्य कार्य आदिवासी बहुल छेत्रों में स्थायी आजीविका के मॉडल का विस्तार करना, वन अधिकार अधिनियम एवं अन्य अधिकारों तक समुदाय की पहुँच सुनिश्चित करना और ऐसे ग्राम संगठनों का गठन करना जो आत्मनिर्भर विकास और सुशासन को बनाए रखने में मदद कर सके। मुझे खुशी है कि मैं संस्था के इस 20 साल की यात्रा का एक छोटा सा हिस्सा बन पाया हूँ और समुदाय के विकास मे अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर पाया हूँ। एम. जे. वी. एस. परिवार के सभी साथियों को बधाई एवं शुकामना व्यक्त करता हूँ जिनके अथक प्रयासों से संस्था आज इस मुकाम तक पहुंची है।

टीम के सदस्यों के अनुभव

शोभा तिवारी (क्षेत्रीय समन्वयक)

मानव जीवन विकास समिति के आधिकारिक पंजीकरण से पहले से ही, मैं इसका हिस्सा बन गई थी। मैं 1999 में केंद्र से जुड़ी जब मैंने गांधी की नई तालीम की शिक्षाओं के विषय में एक प्रशिक्षण में भाग लिया था। बाद में, जब समिति ने पंजीकरण करवाया तो मैं वहां एक कार्यकर्ता के रूप में शामिल हो गई। पिछले 20 वर्षों से मैं जल, जंगल और जमीन के मुद्दों पर काम कर रही हूं और मानव जीवन विकास समिति के साथ पंचायती राज में भाग लेने वाली महिलाओं को सशक्त बना रही हूं। मैं विशेष रूप से गांवों के बैगा जनजाति के आर्थिक सशक्तिकरण पर भी काम कर रही हूं। जमीनी स्तर पर कई संगठन काम कर रहे हैं, लेकिन एम. जे. वी. एस मध्य प्रदेश के गांवों के सबसे गहरे हिस्सों में पहुंच पाया है। 20 साल हो गए हैं और यह समिति अभी भी मुझे कुछ नया, कुछ अलग सिखा रही है।

घनश्याम प्रसाद रैकवार (ब्लॉक समन्वयक)

मैं 2006 में जनादेश के दौरान एकता परिषद से रूबरू हुआ। मुझे इस दौरान भूमि अधिकारों और आजीविका के मुद्दों को समझना था और मैं वास्तव में राजाजी के विचारों से बेहद प्रेरित था। 2007 में मैं नवरचना संस्थान से जुड़ा। यहाँ मैंने जनजातीय समुदायों के साथ काम किया, उनके मुद्दों को समझा और उनकी आजीविका के लिए आर्थिक गतिविधियां करने में उनकी मदद की। फिर मैं 2018 में एम. जे. वी. एस से जुड़ा और बी. आर. एल. एफ परियोजना में शामिल हुआ। हम समुदाय के लोगों को वन अधिकार अधिनियम के तहत उनकी जमीनों पर अधिकार दिलवाने में मदद करते हैं और भूमि से उनकी आजीविका को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रभावी कृषि तकनीकों पर प्रशिक्षण भी दे रहे हैं। इन दो संगठनों में काम करने के माध्यम से मैंने जो कुछ भी सीखा, उस सीख के साथ अब गांवों में लोगों की आजीविका बढ़ाने के लिए काम करने की इच्छा है।

सुरक्षा लाल भोंडे (जिला समन्वयक)

मैं 2002 से एम. जे. वी. एस. से जुड़ा हुआ हूं। हम गांवों के समुदायों के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के लिए काम कर रहे हैं। गांवों के लोगों को समूहों में संगठित करने और उन्हें विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक करने के साथ, हम सरकारी विभाग के अधिकारियों के साथ भी जुड़ते है और इन गांवों में योजनाओं के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करते है। इसके माध्यम से कई लोग लाभान्वित हुए हैं। मैंने मंडला और बालाघाट क्षेत्रों में प्रमुख रूप से काम किया है जहाँ हमने भूमि विकास पर प्रशिक्षण दिया, ताकि लोग अपनी भूमि का प्रभावी उपयोग कर सकें और पर्याप्त आय अर्जित कर सकें ताकि उन्हें पलायन न करना पड़े। हमने कई नक्सलवादी क्षेत्रों के साथ भी काम किया हैं। ऐसे क्षेत्रों में लोगों के साथ लगातार बातचीत के माध्यम से, हमने अहिंसा के विचार को स्थापित करने का प्रयास किया है। यह एक चुनौतीपूर्ण और समृद्ध यात्रा रही है।

नरेश खटीक (ब्लॉक समन्वयक)

मैं अप्रैल 2019 में एम. जे. वी. एस के साथ जुड़ा। इससे पहले मैंने जिस संस्था के साथ काम किया है, उसके माध्यम से मैं निर्भय जी से मिला था। मैंने कृषि और बागवानी में पहले भी काम किया था, लेकिन वन अधिकार का काम मेरे लिए नया था। इसलिए, मैंने समिति में शामिल होने के बाद बहुत कुछ सीखा। मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिस पर हमे काम करना चाहिए, अगर हम भूमिहीन और वंचित समुदायों के उत्थान की कामना करते हैं। "वन मित्र" कार्यक्रम के माध्यम से, हमने कई परिवारों को उनकी भूमि पर कब्जा दिलाने में मदद की। इस प्रक्रिया के माध्यम से, हमने इस प्रक्रिया के दौरान आने वाली चुनौतियों को भी समझा। किसानों को वर्मीकम्पोस्ट और NADEP तकनीकों पर भी प्रशिक्षित किया गया है जो उनके लिए नया था। समिति में काम करने का मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा है।

मूलचंद केवट (रसोइया)

मैं पिछले 4 सालों से यहां काम कर रहा हूं। मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है और मैं बहुत खुश हूं। मैं रसोई के पुरे काम को संभालता हूँ। बहुत सारे लोग आते हैं और यहाँ सेंटर में रहते हैं। वह मेरे द्वारा बनाए गए भोजन को बहुत पसंद करते हैं और बहुत सरहाते हैं! मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं संगठन के अन्य कार्यों से भी आंशिक रूप से जुड़ा हुआ हूं और इसके आदर्शों और उद्देश्यों में मेरा दृढ़ विश्वास है।

तम्मा गडारी (किसान)

मैं लगभग 22 साल यहाँ पर रह रहा हूँ। मैं पहले एक डेयरी में काम कर रहा था। जब निर्भय भाई आए तो मैं उनके साथ उनके काम में जुड़ गया। परिसर में मैं ज़्यादातर खेती के कामो को संभालता हूँ। जब से संगठन ने काम करना शुरू कर दिया है, यह केवल आगे ही बढ़ा है और मैं चाहता हूं कि हम भविष्य में अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचें। मेरा अपना परिवार बिजौरी में रहता है और मैंने गाँव के समुदायों पर समिति के काम का अधिक प्रभाव देखा है।

20 वर्षों में संस्था के समर्थक

शशि सपोर्ट एसोसिएशन

तमादी फ्रांस

द हंगर प्रोजेक्ट

ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान

भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन

फ्रेंड्स ऑफ़ एकता

लेजर फाउंडेशन

महात्मा गांधी सेवा आश्रम

मैर्सी होम

युवा प्रगति

होप फॉर चिल्ड्रन

एक्शन विलेज इंडिया

भारत दर्शन इंडियन एसोसिएशन

गांधी पीस इनिशिएटिव

ए.एन.जी.ओ.सी

एकता फाउंडेशन ट्रस्ट

सी.ई.एस.सी.आई. मदुरई

रिंबावन मुडा इंडोनेशिया

मालधारी रूरल एक्शन ग्रुप

आर.एम.आई.

सोलिफंड प्रोजेक्ट

पिकिया परियोजना

ब्राइट स्टार एफ. जेड. ई.

फिया फाउंडेशन

असर सेंटर

जन अभियान परिषद

यतीश इंदिरा भोगीलाल मेहता

डायट्रेंड्स ज्वैलरी प्राइवेट लिमिटेड

जेम एंड ज्वैलरी प्राइवेट लिमिटेड

पारिख फाउंडेशन

डाबर इंडिया लिमिटेड

क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लिमिटेड

जिला पंचायत कटनी

एम.पी.सी.वी.ई.टी.

"हम अपने सभी समर्थकों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, आप सब के सहयोग के बिना, 20 वर्षों की इस रोमांचक यात्रा को गंतव्य तक ले जा पाना संभव नहीं था।"

- टीम एम. जे. वी. एस.

20 YEARS - CELEBRATION

20 वर्षों में संस्था के समर्थक

जयंत भाई

उषा काबरा जी

आदित्य विक्रम रमेत्रा जी

प्रिया वीके सिंह

सहजो सिंह जी

उदय रूरल एजुकेशन

योगेश भाई

रमेश भाई - सरिता जी

लता बाई पाटनकर जी

दिनेश मेहता

श्री माथुर दादा सुप्रभृति

हितेन मेहता जी

स्वाति मेहता जी

श्री कुणाल यतीश मेहता जी

श्री ध्वल यतीश मेहता जी

मिनाबेन चोरनदास दमानी जी

सरिता एम जोशी जी

दीप्ति सर्वेश साठे जी

अक्षर मिलन मेहता जी

अजेश एन मेहता जी

काम स्कैटर ज्वेलरी प्राइवेट लिमिटेड

मनोज राशिक लाल मेहता जी

मुकुंद कृष्ण जोशी जी

सनव यतीश मेहता जी

राकेश देसाई जी

के जी देसाई चैरिटेबल ट्रस्ट

घेलानी चैरिटेबल ट्रस्ट

पद्म वी शाह जी

एकजे फोर्जिंग्स प्राइवेट लिमिटेड

इंदिरा सुरेश सोनावाला जी

शिल्पी पटेल जी

विनोद मोदी जी

श्वेता सुनील कोठारी जी

बाजीवर भाई पी नथू चैरिटेबल ट्रस्ट

दीपिका पी जोशी जी

पीयूष कोठारी जी

निशित दिनेश मेहता जी

रमेश लक्ष्मीकथम खटकम जी

विनोद डी शाह जी

मिलन रजनीकांत मेहता जी

संदीप मोहनप्रकाश शर्मा जी

प्रवीणा पीयूष कोठारी जी

कमलेश गांधी जी

नैतिक शाह जी

हेमंत शाह जी

संदीप मित्रप्रकाश शर्मा जी

मनोज कलवार जी

विनायक शिंदे जी

सुनील संतरामन जाधव जी

मित्तल डी पुरानी जी

लीला हीरा फाउंडेशन

महेश राव जी

डी के समैया एंड एसोसिएशन

बॉम्बे सर्वोदय मंडल

सुनील कोठारी जी

चंदू मेमोरियल ट्रस्ट

कृपाल सठिया जी

जयंती लाल शाह जी

रजनीकांत छोटेलाल मेहता जी

सुशीला धरणीधरिका जी

कुणाल यतीश मेहता जी

विल्सन किस्तु फर्नान्डिस

पार्वती बा श्रेष्ठी ट्रस्ट

नितिन सोनावाला जी

सुनील संजय कोठारी जी

20 YEARS - CELEBRATION

वित्तीय सारांश

हमारे शुभचिंतक की ओर से -

यतीश भोगीलाल मेहता
(निदेशक, डायट्रेंड्स)

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मानव जीवन विकास समिति अपनी 20 वीं वर्षगांठ मना रही है। मैं संगठन के साथ बहुत लंबे समय से जुड़ा हुआ हूं और मैंने इनके काम को बढ़ते हुए देखा है। कोई भी संगठन जो ऐसे परिमाण का काम करता है, उसे बहुत सारे संसाधनों के संदर्भ में सहयोग की आवश्यकता होती है। मेरे कई दोस्त एवं करीबी लोग और मैं स्वयं लंबे समय से एम.जे.वी.एस. को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं। मुझे बहुत खुशी है कि एम.जे.वी.एस. अपनी विभिन्न परियोजनाओं के लिए धन के उपयोग के मामले में बहुत प्रभावी रहा है। संगठन कई वंचित, स्थानीय समुदायों के साथ कई जिलों के दूरदराज के गांवों में अविश्वसनीय काम कर रहा है। मैं एम.जे.वी.एस. की 20 वर्षों की अथक मेहनत को पूरा करने के लिए टीम को बधाई देता हूं और आने वाले कई वर्षों तक समर्थन देना जारी रखूंगा। मुझे खुशी है कि आप सभी के साथ जुड़ा रहूंगा और सामाजिक कल्याण के लिए अपनी भागीदारी करूंगा। एम.जे.वी.एस. के पूरे परिवार को बधाई और शुभकामनाएं। मुझे एम.जे.वी.एस. से परिचित कराने के लिए मैं राजगोपाल पी. व्ही. (राजाजी) और एकता परिषद के सभी सदस्यों का बहुत आभारी हूं ।

सभी वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट हमारी वेबसाइट पर अपलोड की जाती हैं। आप उन्हें इस QR कोड को स्कैन करके देख सकते हैं।

भावी योजनाएँ

- समिति के कार्य को दूसरे राज्यों में फैलाना।
- आजीविका के साधन में कम से कम 20 हजार किसानों के साथ काम को मजबूत करना।
- कम से कम दो ब्लॉको में सघन रूप से संगठन को मजबूत करना।
- रूरल टूरिज्म को 8 सर्किट से बढाकर 15 सर्किट तक पहुचाना।
- ट्रेनिंग सेन्टर को जैव विविधता के मॉडल के रूप में विकसित कर तैयार करना।
- 150 गाँवों को सघन रूप से गाँधी विचार धारा से तैयार करना।
- युवाओं के साथ (ग्रामीण एवं शहरी) नेटवर्क खड़ा करना।
- महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य पर ज्यादा बल देना।
- जैविक खेती. बीज बैंक अनाज बैंक को मजबूत करना ताकि गाँव- गाँव में खाद्यन्न की कमी न हो।
  सरकारी योजनाओं तक लोगों की पहुँच सुनिश्चित करना।

मानव जीवन विकास समिति की 20-वीं वर्षगांठ

28 नवंबर 2020

असीम आनंद और कृतज्ञता के साथ *28* नवंबर *2020* को हम मानव जीवन विकास समिति *(*एम. जे. वी. एस*)*, कटनी, मध्य प्रदेश के *20*वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। पिछले कई वर्षों को स्मरण करके, हम आज एम. जे. वी. एस के सामूहिक प्रयासों का परिणाम देख सकते हैं- एम. जे. वी. एस ने हजारों लोगों को न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावित किया है। इसके युवा विकास, महिला सशक्तीकरण, वन और भूमि अधिकार, जैविक कृषि और वाटरशेड विकास के माध्यम से स्थायी आजीविका मॉडल पर आधारित ग्रामीण विकास परियोजनाओं का प्रभाव कई क्षेत्रों में ठोस रूप से दिखाई पड़ता हैं।

COVID-19 महामारी के चलते ये साल एम. जे. वी. एस के लिए भी असाधारण रहा है, परन्तु कुछ नए परियोजनाओं का प्रारम्भ हुआ। प्रवासी मजदूर जो पलायन कर बाहर चले गए थे, उनके लौटने पर उनके लिए विभिन्न राहत कार्य किए गए, जिनसे दीर्घकालिक कृषि और गैर कृषि परियोजनाएँ जैसे कि बीज बैंक, मुर्गी पालन और पशुपालन की शुरुआत हुई। ये उभरती हुई परियोजनायें हमे हमारे उद्देश्य, यानी पर्यावरण अनुकूल अहिंसक अर्थव्यवस्था के लिए विकास के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने की ओर बढ़ा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, स्वराज के लिए विभिन्न प्रयोगों को साकार करने की दिशा में हम बढ़ रहे है।

दुनिया भर से हमारे मित्रों, शुभचिंतकों और समुदाय के सदस्यों के सहयोग के बिना दो दशक पूरे करना असंभव था। इस *20* वीं वर्षगांठ के अवसर पर हम उन सभी का आभार व्यक्त करते हैं एवं गरीबी उन्मूलन और स्थायी सामाजिक विकास मॉडल बनाने के हमारे सामूहिक वैश्विक मिशन की ओर बढ़ने का संकल्प लेते हैं। *20* वीं वर्षगांठ को मनाते हुए हम आप सभी को संवाद और संगति की इस यात्रा में हमारे साथ सह-यात्रा करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

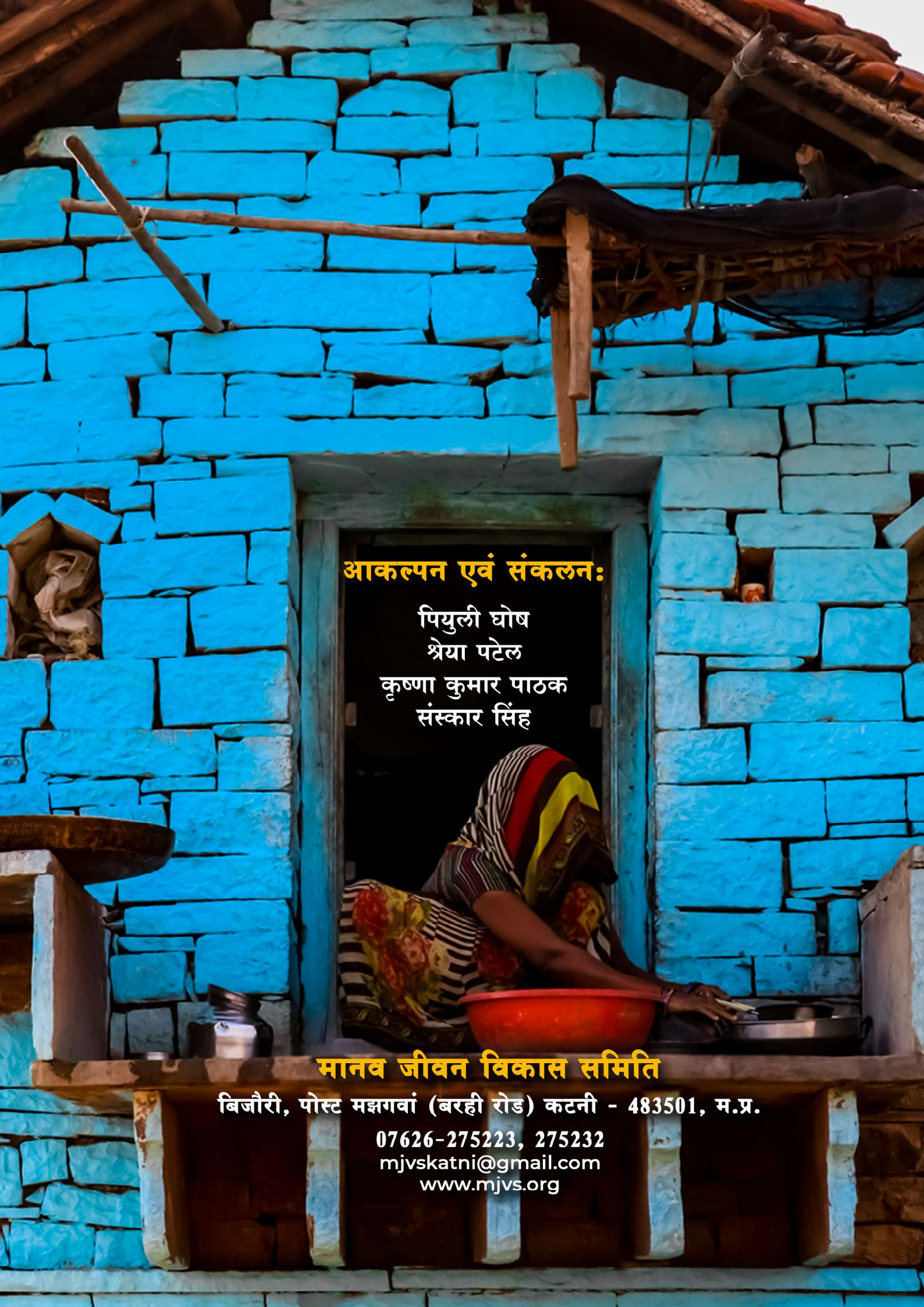

आकल्पन एवं संकलन:

पियुली घोष
श्रेया पटेल
कृष्णा कुमार पाठक
संस्कार सिंह

मानव जीवन विकास समिति

बिजौरी, पोस्ट मझगवां (बरही रोड) कटनी - 483501, म.प्र.

07626-275223, 275232
mjvskatni@gmail.com
www.mjvs.org